दृष्टिकोण

मिशन और नैतिकता पर धर्मशास्त्रीय दृष्टिकोण
हिंदी संस्करण, वर्ष 2019, अंक 1

केवल निजी वितरण के लिए

EFICOR
Working towards a just, responsible & compassionate society

"... मैं इसलिये आया कि वे जीवन पाएँ, और बहुतायत से पाएँ।"

यूहन्ना 10:10

दृष्टिकोण अर्थात नजरिया। यह पत्रिका मसीहियों को संपूर्णात्मक मिशन पर अपने **दृष्टिकोण** या नजरिया को प्रस्तुत करने का स्थान प्रदान करती है। हमारा दर्शन है कि **दृष्टिकोण** अपने पाठकों को बदलाव के लिए प्रेरित करेगी। हम आशा करते हैं कि विकास के कार्य से जुड़े सेवाकर्मियों, धर्म–शास्त्रियों, जमीन से जुड़े कार्यकर्ता और उन सभी व्यक्तियों के अनुभव, जो परमेश्वर के प्रेम को व्यवहारिक तौर पर प्रदर्शित करने के काम में लगे है; मसीहियों को प्रभावित और प्रोत्साहित करेंगे कि वे हमारे देश में शांति और न्याय की स्थापना के मुहिम में खुद जुड़ सकें।

दृष्टिकोण सामाजिक मुद्दों पर एक बाइबलिक नजरिया प्रस्तुत करने का प्रयास करता है, और पाठकों को संपूर्णात्मक सेवकाई के लिए सूचना एंव भागीदारी के विभिन्न नमूने भी प्रदान करता है। यह भारत में विकास के मुद्दों पर सुसमाचारीय सोच और संवाद का एक मंच है।

दृष्टिकोण का यह पहला हिन्दी संस्करण है, और आशा है कि आपकी प्रतिक्रिया और सहयोग से इसका प्रकाशन आगे भी जारी रहेगा। मनों को कार्य की ओर प्रवृत करने के **एफिकोर** के इस प्रयास में आपके आर्थिक सहयोग और योगदान का स्वागत है।

संपादक – रेव्ह. केन्नडी धनाबालन

संपादकीय टीम – लालबियाकलुइ (कुकी), राज मंडल, जोआन लालरोउमोइ, ओलिता चन्द्रा, अच्छे लाल यादव।

कृपया किसी प्रकार की पूछताछ के लिए संपर्क करें:

प्रकाशन टीम

एफिकोर

308, महट्टा टावर

B–54, कम्युनिटी सेंटर

जनकपुरी, नई दिल्ली–110058, भारत

email: hq@eficor.org

www: www.eficor.org

एफिकोर (इवान्जेलिकल फेलोशिप आफ इन्डिया कमीशन आन रिलीफ) का एक प्रकाशन

केवल निजी वितरण के लिए

दृष्टिकोण कई नजरियों की पत्रिका है। प्रस्तुत नजरिये जरूरी नहीं कि एफिकोर के नजरिये से मेल खाते हों।

लेआउट और डिजाइन – बोस्को सोसाइटी फार प्रिन्टिंग एण्ड ग्राफिक ट्रेनिंग

कवर डिजाइन – नवीन शिरोमणि, राज मंडल और जोआन

एफिकोर कर्नाटक सोसाइटी रजिस्ट्रेशन एक्ट 1960 के अर्न्तगत (कर्नाटक एक्ट न.17,1960) 30, अप्रेल 1980 को पंजीकृत किया गया। रजिस्ट्रेशन संख्या 70/80-81 है। एफिकोर एफ. सी. आर. ए. 1976 के अर्न्तगत भी पंजीकृत है और रजिस्ट्रेशन संख्या है 231650411

रजिस्टर्ड आफिस का पता–1305, ब्रिगेड टावर्स, 135 ब्रिगेड रोड, बंगलुरू –560025 कर्नाटक)

समग्र मिशन

1.	विषय सूची	1
2.	संपादकीय	2
3.	मुख्य लेख : समग्र मिशन श्री राज मंडल	3
4.	मुख्य लेख पर प्रतिक्रिया : यीशु मसीह- समग्र मिशन सेवकाई के सच्चे मिसाल श्री अच्छे लाल यादव	7
5.	समग्र मिशन का भारतीय संदर्भ : समग्र मिशन ऐतिहासिक और सामाजिक नजरिए से रेव्ह.डा.मोनोदीप डैनियल	10
6.	इतिहास के आईने से : डा. विलियम कैरी-भारत में समग्र मिशन के जनक रेव्ह. राम सूरत	12
7.	अवाम की आवाज : परिवर्तन मॉडल पास्टर मुनिन्द्र पासवान	15
8.	मेरे भारत की तस्वीर : सत्य, न्याय और धार्मिकता का समाज डा. सोनाझरिया मिंज	17
9.	पुस्तक समीक्षा : परिवर्तन- मसीह से मिलाप सुश्री वेरोनिका मैसी	20
10.	सक्रिय विश्वास : समुदाय की सेवा - ईश्वर की सेवा पास्टर नथानिएल मरांडी	21
11.	बाइबिल अध्ययन : समग्र मिशन-हमारा कर्तव्य श्रीमती ओलिता चन्द्रा	23
12.	कार्रवाई के लिए सुझाव	24

संपादकीय

दृष्टिकोण का पहला अंक अंग्रेज़ी भाषा में ''आपदा.....हम क्या कर सकते हैं?'' विषय पर 1994 में प्रकाशित हुआ। तब से विभिन्न मुद्दों पर इस पत्रिका के 40 अंक प्रकाशित हो चुके हैं। इस पत्रिका के माध्यम से विभिन्न समकालीन सामाजिक मुद्दों पर विचार विमर्श करने के लिए एक मंच प्रदान किया जाता है और पाठकों को सम्पूर्ण सुसमाचार के आधार पर जानकारी और उस ओर कार्य करने के लिए सुझाव दिये जाते हैं। अंग्रेज़ी पत्रिका की सफलता को देखते हुए इस पत्रिका का प्रकाशन हिन्दी में किया गया है जिससे हिन्दी भाषी पाठक भी इसका लाभ उठा सकें। इस पत्रिका के पहले हिन्दी संस्करण को जिसका मुख्य विषय **''समग्र मिशन''** है प्रकाशित करते हुऐ हमें बहुत ही प्रसन्नता हो रही है।

भारतवर्ष को आज़ाद हुए 71 वर्ष बीत गये लेकिन आज भी हमारे देश के करोड़ों नागरिक दो वक्त की रोटी के लिए संघर्ष कर रहें हैं। जीवन की आम जरुरतें जैसे स्वच्छ पानी, संतुलित भोजन, आवास, चिकित्सा सुविधाएं और शिक्षा इत्यादि बहुत सारे देशवासियों की पहुंच के बाहर हैं। न्याय ना मिल पाने के कारण शोषित समुदाय के नौजवान आज हिंसा का मार्ग अपना रहें हैं। गरीबी और अमीरी के बीच की खाई बढ़ती ही जा रही है। दलितों, आदिवासियों और अन्य वंचित समुदायों का शोषण जारी है और नारियों के विरुद्ध होने वाली हिंसा और अत्याचार की घटनाओं में अत्यधिक वृद्धि हुई है।

एक मसीही होने के नाते भारतवर्ष की इस अवस्था के लिए हम किस हद तक जिम्मेदार हैं? यदि हम अपने और अपनी कलीसियाओं की ओर देखें और विचार करें कि समाज में फैले इस शोषण, अत्याचार और अन्याय के खिलाफ हमने क्या कार्य किया तो हम पायेंगे कि कलीसियाओं का ज्यादातर ध्यान सुसमाचार प्रचार और आत्माओं को बचाने की ओर रहा है। हमने न तो सम्पूर्ण सुसमाचार को सही तरीके से समझा, न जानना चाहा और इसके परिणामस्वरूप भारत में सुसमाचार के एक ही पहलू पर ध्यान केन्द्रित किया गया और उसके दूसरे पहलू को नज़रअंदाज़ कर दिया गया। आत्माओं को बचाना और उनको कलीसिया से जोड़ना ही कलीसिया के मिशन और सेवा का केन्द्रबिन्दु रहा। इसके परिणामस्वरूप कलीसिया ने लोगों की आर्थिक उन्नति और सामाजिक विकास की ओर कार्य करना अपनी जिम्मेदारी नहीं समझा।

बाइबल कहती है कि ***''पर जिस किसी के पास संसार की संपत्ति हो और वह अपने भाई को कंगाल देख कर उस पर तरस न खाना चाहे, तो उस में परमेश्वर का प्रेम क्योंकर बना रह सकता है''?*** बाइबल हमें आरम्भ से ही सम्पूर्ण सुसमाचार के बारे में स्पष्ट रूप से बताती है। पुराने नियम में हम देखते हैं कि किस प्रकार परमेश्वर ने इस्राएली जाति को मिस्र की गुलामी से छुटकारा दिया। गरीबों, लाचारों, विधवाओं, पिछड़े, शोषित एंवम् कमज़ोर वर्ग के लोगों की सुधि लेना और उनका न्याय चुकाना परमेश्वर की महान योजना का मुख्य हिस्सा है। जब हम यीशु मसीह के जीवन और उसके सेवा कार्य को देखते हैं तो हमें स्पष्ट रूप से पता चलता है कि उन्होंने हमेशा लोगों की ज़रूरतों को पूरा किया और उन पर दया दिखायी और उनके न्याय के लिए आवाज उठायी।

हिन्दी भाषा में दृष्टिकोण पत्रिका के इस प्रथम अंक में हम परमेश्वर के राज्य के उन पहलुओं पर ध्यान केन्द्रित करेंगे, जिनको महत्वपूर्ण न जान कर नज़र अन्दाज़ किया गया है और उन पर गम्भीर विचार नहीं किया गया है। परमेश्वर द्वारा दिया गया समग्र मिशन जीवन के समस्त क्षेत्रों से नाता रखता है। हम इस बात पर चर्चा करेंगे कि मानवजाति के लिए परमेश्वर की महान योजना को उसकी सम्पूर्णता में समझना हम सभों के लिए क्यों अति आवश्यक है? बिना उसे समझे और जाने हम परमेश्वर के राज्य का विस्तार सही तरीके से नहीं कर सकते। परमश्वर हमसे क्या चाहता है यह जानना हमारे लिए बहुत जरूरी है। इस पत्रिका के विभिन्न लेखों द्वारा हम इस बात को जानने व समझने का प्रयास करेंगे कि परमेश्वर का समग्र मिशन क्या है और हम इसको कैसे पूरा कर सकते हैं?

आज हम विभिन्न तरीकों से परमेश्वर के राज्य के विस्तार के लिए कार्यरत हैं, लेकिन क्या परमेश्वर हमारे कार्यो से प्रसन्न है? क्या वो हमारी योजनाओं से सहमत है? क्या जो हम कर रहे हैं वही परमेश्वर की योजना है? क्या यही हमारी बुलाहट है? इस अंक के माध्यम से हम इन सारे प्रश्नों के उत्तर ढूंढने का प्रयास करेंगे और उनके आधार पर हम अपने सेवा कार्य को एक नयी दिशा देने का प्रयास करेंगे।

इस अंक में इस क्षेत्र में कार्य कर रहे लोगों द्वारा समग्र मिशन पर लेख लिखे गये हैं और उनके व्यक्तिगत अनुभवों को उनके ही शब्दों मे प्रस्तुत किया गया है। हम परमेश्वर पिता का धन्यवाद करते हैं कि उन्होंने इस पत्रिका को प्रकाशित करने के लिए हमारी मदद की। हमें विश्वास है कि आगे भी हम इस पत्रिका को प्रकाशित करते रहेंगे। हमें आशा है कि आपको यह पत्रिका अवश्य प्रोत्साहित करेगी और आप इसके द्वारा आशीषित होंगे। इसको और बेहतर बनाने के लिए आप अपने सुझाव अवश्य भेजें, जिससे आने वाले समय में इस पत्रिका को और बेहतर बनाया जा सके।

समग्र मिशन

श्री राज मंडल

मसीहियों के लिए 'मिशन' शब्द काफी आम और जाना पहचाना है। गैर–मसीहियों में भी मसीहियत की छवि मुख्यतया एक मिशनरी धर्म के रुप में अंकित है, जिसके अनुसार मसीही लोग अपने धर्म या विश्वास का प्रचार–प्रसार विभिन्न गतिविधियों द्वारा करने में हमेशा सक्रिय रहते हैं। मसीहियों पर धर्मान्तरण कराने के आरोप भी लगते रहते हैं और इसको रोकने के लिए कई राज्यों ने विशेष विधेयक भी पारित किये हैं। कुछ वर्षों पहले तक भारत की आम जनता का मसीहियों से ज्यादातर परिचय भी मिशन स्कूल, मिशन–अस्पताल, मिशन–कम्पाउण्ड या देशी–विदशी मिशनरियों द्वारा प्रचार के द्वारा ही होता था। किन्तु इस शीर्षक में मिशन के आगे प्रयुक्त विशेषण 'समग्र' शायद हिन्दी–भाषी मसीहियों के लिए भी नया हो सकता है। मिशन के संदर्भ में क्यों इस शब्द के प्रयोग करने की आवश्यकता पड़ी इस बात को समझना जरुरी है।

डेविड जे.बोश ने अपनी पुस्तक "ट्रांसफार्मिंग मिशन"[1] में बतलाया है कि 1950 के दशक तक साधारण तौर पर मिशन का मतलब निम्नलिखित संदर्भो में समझा जाता था –

1. मिशनरियों का किसी निर्दिष्ट क्षेत्र पर भेजा जाना
2. उन मिशनरियों द्वारा की जाने वाली गतिविधियाँ
3. भौगोलिक क्षेत्र जहां मिशनरी सक्रिय हों
4. वो संस्था जो मिशनरियों को भेजती हो
5. गैर–मसीही जगत या मिशन–क्षेत्र
6. विशेष सेवाओं की श्रृंखला जो मसीही विश्वास को फैलाने या उसे गहरा बनाने के लिए की जाएं।

उर्पयुक्त विचारों को मसीही विश्वास के आधार पर इन शब्दों मे व्यक्त किया जा सकता हैः

- विश्वास का प्रचार–प्रसार
- परमेश्वर के राज्य का विस्तार
- अन्य विश्वास के लोगों का मनान्तरण
- नई मंडलियों का स्थापन

ऐतिहासिक तौर पर यदि कलीसिया के इतिहास का आकलन किया जाए तो यह स्पष्ट है, कि मिशन की सोच काफी व्यापक थी, जिसमें मिशन का तात्पर्य जीवन के समस्त क्षेत्रों में यीशु मसीह की शिक्षाओं को अमल में लाने के प्रयास शामिल थे।

1 डेविड जे.बोश, *ट्रांसफार्मिंग मिशन,* (मेरी नोल, न्यूयार्कः ओरबिस)1991, पृ.1.

परन्तु बीसवीं सदी के उत्तरार्ध में कुछ ऐतिहासिक घटनाओं के फलस्वरुप परंपरावादी मसीहियों ने उदारवादी सोच द्वारा प्रभावित 'सामाजिक सुसमाचार' प्रचार को रोकने के लिए मिशन की सोच सुसमाचार की मौखिक उद्घोषणा एंव मन–परिवर्तन तथा कलीसिया स्थापन तक ही सीमित कर दिया था।

परंतु 1960 के दशक में इवान्जेलिकल (सुसमाचार प्रचार पर जोर देने वाली) कलीसियाओं को भी यह एहसास होने लगा कि दुनिया के ज्वलंत समस्याओं से मुँह मोड़ना बाइबल सम्मत नजरिया नहीं हो सकता और 1966 के वीटन घोषणा पत्र[2] में यह आग्रह किया गया कि कलीसियाओं को मानवीय स्वतंत्रता और समानता तथा सामाजिक न्याय के प्रति प्रतिबद्ध होने तथा सक्रिय होने की आवश्यकता है। हालांकि इस घोषणा के बावजूद मिशन का स्वरुप मुख्यतया सुसमाचार प्रचार की प्राथमिकता पर ही टिका रहा।

परंतु फिर भी हम दृढ़ता पूर्वक कहते हैं कि सुसमाचार प्रचार और सामाजिक–राजनीतिक संलग्नता दोनों ही मसीही कर्त्तव्य के हिस्से हैं। क्योंकि दोनों ही परमेश्वर और मनुष्य के विषय हमारे सिद्धांतों – हमारे पड़ोसी के प्रति प्रेम और प्रभु यीशु मसीह के प्रति हमारी आज्ञाकारिता की अभिव्यक्तियॉ हैं।

1974 के लुसान कांग्रेस में जो बीसवीं सदी में ईवान्जेलिकल लोगों की विश्व–स्तरीय महत्वपूर्ण सभा थी, कलीसिया के मिशन को उसकी समग्रता में देखा गया और जारी किए गए घोषणा पत्र में निम्नलिखित तौर पर व्यक्त किया गयाः "हम इस बात की पुष्टि करते हैं कि परमेश्वर सभी मनुष्यों के सृष्टिकर्त्ता एंव न्यायकर्ता हैं। इसलिए समस्त मानव समाज में न्याय और मेल मिलाप स्थापित करने, और सभी प्रकार के उत्पीड़न से उनको मुक्त कराने की उनकी चाहत, हमारी चाहत का भी हिस्सा होना चाहिए। चुंकि मनुष्य की रचना परमेश्वर के स्वरुप में की गई इसलिए हरेक व्यक्ति की चाहे वह किसी नस्ल, धर्म, रंग, संस्कृति, वर्ग, लिंग या उम्र का क्यों ना हो, एक आंतरिक गरिमा है, जिस वजह से वह सम्मान एंव सेवा पाने का हकदार है, शोषित होने का नहीं। यहां हम पश्चाताप करते हैं कि हमने इन बातों को नजरअंदाज

2 कांग्रेस ऑन दि वल्ड मिशन ऑफ दि चर्च, वीटन, 1966.

किया है तथा कई बार सुसमाचार प्रचार को हमारे सामाजिक दायित्व एंव चिंता से अलग करके देखा है। हालांकि मनुष्यों से मेल–मिलाप, परमश्वर से मेल–मिलाप नहीं है, ना ही सामाजिक कार्य–सुसमाचार प्रचार है, न ही राजनीतिक स्वतंत्रता मुक्ति है, परंतु फिर भी हम दृढ़ता पूर्वक कहते हैं कि सुसमाचार प्रचार और सामाजिक–राजनीतिक संलग्नता दोनों ही मसीही कर्त्तव्य के हिस्से हैं। क्योंकि दोनों ही परमेश्वर और मनुष्य के विषय हमारे सिद्धांतों – हमारे पड़ोसी के प्रति प्रेम और प्रभु यीशु मसीह के प्रति हमारी आज्ञाकारिता की अभिव्यक्तियाँ हैं। मुक्ति के संदेश में अर्न्तनिहित है, हर किस्म के अलगाव की भावना पर, उत्पीड़न और भेदभाव पर न्याय का संदेश। हमें बुराई और अन्याय जहॉ कहीं भी हों, उनकी निंदा करने से नहीं डरना चाहिए। जब लोग मसीह को ग्रहण करते हैं तो उनके राज्य में उनका नया जन्म होता है और इस अन्यायी जगत के मध्य में उन्हें उसके राज्य के न्याय के सिर्फ प्रदर्शन करने की चेष्टा ही नहीं करनी है, वरन इसे फैलाना भी है। जिस मुक्ति का हम दावा करते हैं, उसे हमारे जीवनों में पूर्ण परिवर्तन लाने की आवश्यकता है– हमारे व्यक्तिगत और सामाजिक कर्त्तव्यों, दोनों में। विश्वास–कार्य के बिना मरा हुआ है।''[3]

उपरोक्त घोषणा के द्वारा यह स्पष्ट है कि लुसान की सभा में सामाजिक कार्यो की उपेक्षा करने के लिए सिर्फ पश्चाताप ही नहीं किया गया वरन् इस बात को भी स्वीकारा गया कि सामाजिक–राजनीतिक भागीदारी, सुसमाचार प्रचार के साथ मसीही मिशन के अनिवार्य पहलू थे।

1980 के दशक में सुसमाचार–प्रचार एंव सामाजिक कार्यों के संबधों पर चर्चा जारी रही और 1982 में ग्रेंड–रेपिड्स, मिशीगन में आयोजित विचार–विमर्श सभा में इस संबंध को तीन तरीके[4] से देखा गया –

पहला– मसीही सामाजिक कार्य सुसमाचार प्रचार का परिणाम है क्योंकि जो इस कार्य में शामिल हैं, वो मसीही हैं। उन्हें इन कार्यों में इसलिए भी सक्रिय होना चाहिए क्योंकि उनको भले कार्यों को करने के लिए छुड़ाया गया है और इसका अर्थ है कि सामाजिक कार्य भी सुसमाचार प्रचार के उद्देश्य हैं।

दूसरा कि सामाजिक कार्य, सुसमाचार प्रचार के लिए एक पुल की तरह है क्योंकि यह परमेश्वर के प्रेम को प्रकट करता है और इसके द्वारा सुसमाचार की उद्घोषणा के प्रति व्याप्त पूर्वाग्रहों को दूर करता है तथा मार्ग प्रशस्त करता है।

तीसरा सामाजिक कार्य, सुसमाचार प्रचार का सहभागी है और मसीही मिशन में कैंची के दो हिस्सों या एक चिड़िया के दो पंखों के सदृश है।

इस विचार को अगले वर्ष 1983 में वीटन में आयोजित "कलीसियाः मानवीय आवश्यकताओं के प्रत्युत्तर में" शीर्षक आयोजित सभा में और मजबूती प्राप्त हुई जिसमें कलीसियाओं को सिर्फ पारंपरिक सेवकाईयों तक ही सीमित ना रहते हुए अपने स्थानीय समुदायों एंव वृहत समाज में उपस्थित बुराईयों एंव सामाजिक अन्याय के मसलों को भी सम्बोधित करना चाहिए। उनके घोषणापत्र का अंतिम हिस्सा यीशु मसीह में परमेश्वर के राज्य के आगमन को समग्र–मिशन के आधार के रुप में प्रस्तुत करता है–

"हम घोषणा करते हैं कि परमेश्वर का राज्य वर्तमान और भविष्य दोनों में मौजूद है, सामाजिक और व्यक्तिगत दानों स्तरों पर, भौतिक और आत्मिक दोनों क्षेत्रों में ... यह राई के दाने के समान बढ़ता है और हमारे वर्तमान युग का न्याय करता तथा परिवर्तित भी करता है। इस नजरिए से भविष्य के प्रति हमारी आशा हमें एक दूरगामी भविष्य में पलायन करने की इजाजत नहीं देता परन्तु हमारे वर्तमान युग और अगली पीढ़ी दोनों को आशा से भर देने का प्रोत्साहन प्रदान करता है। एक समुदाय के रुप में हमें सुसमाचार प्रचार करने, मानवीय जरुरतों का प्रत्युत्तर देने एंव सामाजिक बदलाव के लिए काम करने को प्रेरित करता है।"[5] इस प्रकार से एक ईवान्जेलिकल सभा द्वारा पहली बार आधिकारिक तौर पर सुसमाचाार प्रचार और सामाजिक कार्यों के बीच बरसों से चले आ रहे विभाजन को मिटा दिया गया।

"समग्र मिशन या समग्र परिवर्तन सुसमाचार की घोषणा और प्रदर्शन है। यह बस सुसमाचार प्रचार और सामाजिक भागीदारी का एक दूसरे के साथ–साथ किया जाना ही नहीं है।

21 वीं शताव्दी के प्रारंभ में सितम्बर 2011में आयोजित मीका नेटर्वक की मंत्रणा बैठक में 'समग्र–मिशन' को विस्तार रुप से इस तरह परिभाषित किया गया–"समग्र मिशन या समग्र परिवर्तन सुसमाचार की घोषणा और प्रदर्शन है। यह बस सुसमाचार प्रचार और सामाजिक भागीदारी का एक दूसरे के साथ–साथ किया जाना ही नहीं है। परन्तु समग्र मिशन में हमारी घोषणा के सामाजिक परिणाम होते हैं, जब हम लोगों को जीवन के समस्त क्षेत्रों में पश्चताप करने का आह्वान करते हैं। हमारी सामाजिक भागीदारी के सुसमाचारीय परिणाम होते हैं, जब हम यीशु मसीह के परिवर्तनकारी अनुग्रह की गवाही देते हैं। यदि हम दुनिया को नज़रअंदाज करते तो हम परमेश्वर के वचन का विश्वासघात करते हैं, जो हमें इस दुनिया में सेवा करने को भेजता है। यदि हम परमेश्वर के वचन की उपेक्षा करते है तो हमारे पास दुनिया को देने के लिए कुछ नहीं है। न्याय और विश्वास के द्वारा दोषमुक्त ठहराया जाना, आराधना और राजनीतिक कार्रवाई, आत्मिक और भौतिक, व्यक्तिगत बदलाव और संरचनात्मक परिवर्तन साथ–साथ हैं। जैसे कि हम यीशु मसीह के जीवन में देखते है – होना, करना और कहना हमारे इस समग्र कार्य के अभिन्न हिस्से हैं।"[6]

[3]जॉन स्टाट, *क्रिश्चियन मिशन इन दि मार्डन वर्ल्ड* (डाउनर्स ग्रोवः इन्टर वारसिटी प्रेस), 1973. पृ. 24.

[4]कनसल्टेशन, "ऑन दि रिलशनशिप आफ इवान्जेलिज्म एण्ड सौशल रेसपोन्सबिलिटी" (ग्रेंड रेपिड्सः मिशीगन), 1982.

[5]ट्रांसफारमेशन, दि चर्च इन रेसपान्स टू ह्यूमन नीड, (वीटनः इलिनाये), 1983.

[6]माइका नेटवर्क इन्टरनेशनल कांफ्रेस, (आक्सफोर्ड : इंगलैंड),सितंबर

इस घोषणा में हम सुसमाचार प्रचार एवं सामाजिक भागीदारी को अलग–अलग नहीं वरन् अविभाज्य एंव एकीकृत रुप में देखते है। श्रीलंका के मसीही अगुवे और कई पुस्तकों के लेखक डा. विनोद रामाचन्द्रन इस घोषणा पर अपनी प्रतिक्रिया लिखते हुए कहते हैं कि, "समग्र मिशन को 'कलीसिया की गतिविधियों' या 'मिशन की रणनीति' के बजाय इस नजरिये से ज्यादा समझा जाना चाहिए कि "कलीसिया को क्या होने के लिए बुलाहट मिली है।" वो कहते हैं कि समग्रता का सिद्धांत यहाँ कलीसिया की सत्यनिष्ठा या उसकी खराई से है। एक सत्यनिष्ठ व्यक्ति या एक खरा व्यक्ति; ऐसा व्यक्ति होता है जो भरोसेमंद है, जिसके व्यक्तित्व में उसके सार्वजनिक जीवन और व्यक्तिगत जीवन के बीच कोई असंगति या फर्क ना पाया जाए। समग्र मिशन का मतलब यहॉ कलीसिया के लिए एक किस्म की बुलाहट है जिसमें वह अपने धर्मज्ञान और सिद्धांतों और अपने कार्यों में उन बातों को हमेशा साथ–साथ रखे जिन्हें बाइबल का त्रिएक परमेश्वर हमेशा इकट्ठा रखता है–"होना" और "करना" "आत्मिक" और "शारीरिक", "व्यक्तिगत" और "सामाजिक", "अलौकिक" और "लौकिक", "न्याय" और "करुणा", "गवाही" और "एकता", "सत्य का प्रचार" और "सत्य–व्यवहार" इत्यादि।[7]

संपूर्णता का सिद्धांत

समग्रता के सिद्धांत को हम संपूर्णता के विचार से भी समझ सकते हैं, जिसे गणित के शब्दों में एक पूर्ण–संख्या के रुप में बताया जाता है जो किसी भी इकाई की पूर्णता को जाहिर करता है। पूर्णता को हम पूरा, स्वस्थ, समूचा, सकल, कुल, तमाम, मुकम्मल, सिद्ध, आदि शब्दों से भी समझ सकते हैं। ये सभी शब्द इस बात का बयान करते हैं कि जीवन पूर्णता में जीने के लिए बना है, अंशों में नहीं। जीवन के विभिन्न हिस्सों को उनकी संपूर्णता में समझा जाना आवश्यक है। समग्रता का सिद्धांत बतलाता है कि हम इस संपूर्णता पर बल दें और विभिन्न हिस्सों को उनके परस्पर निर्भरता की दृष्टि से देखें। पूर्णता का सिद्धांत बाइबल का एक बहुत गहरा और गम्भीर विचार है। पौलुस इस सिद्धांत का इस्तेमाल कलीसिया की एकता को बयान करने के लिए मानव देह और उसके विभिन्न अंगों की एकता और परस्पर निर्भरता का उदाहरण देकर करते हैं (1 कुरि.12)।

परमेश्वर का स्वरुप

त्रिएक परमेश्वर का चरित्र इस एकता का सबसे परम उदाहरण है। व्यवस्थाविवरण 6:4–5 स्पष्ट रुप से कहता है कि, "हे इस्राएल, सुन, यहोवा हमारा परमेश्वर है, यहोवा एक ही है।" हालांकि धर्मशास्त्र इस एक परमेश्वर का पिता, पुत्र और पवित्रआत्मा के तीन अलग अलग व्यक्तियों के रुप में प्रकाशन देता है। त्रिएक परमेश्वर का यह रहस्य और सच्चाई परमेश्वर के स्वरुप का आधार है और परमेश्वर का यही चरित्र हमें समग्र मिशन या संपूर्णता के मिशन को समझने में हमारी सहायता करता है। सच तो ये है कि 16वी शताब्दी तक "मिशन" शब्द का इस्तेमाल त्रिएक परमेश्वर को बयान करने के लिए ही किया जाता था– पुत्र परमेश्वर का पिता परमेश्वर के द्वारा भेजा जाना और पवित्रआत्मा का पिता और पुत्र के द्वारा भेजा जाना।"[8]

इसलिए हम त्रिएक परमेश्वर के तीनों व्यक्तियों में किसी एक को दूसरे से ज्यादा प्रमुखता प्रदान नहीं कर सकते, ना ही उनको एक दूसरे से अलग देखकर परमेश्वर की सही समझ बनाए रख सकते हैं। कभी कभी हम इस छलावे में फंस जाते हैं, जब हम त्रिएक परमश्वर के एक व्यक्ति के कार्य को दूसरे की बजाय अधिक महत्व देने लगते हैं। कई बार जब हम यीशु–मसीह द्वारा हमारे उद्धार के लिए किए गए बलिदान पर ज्यादा बल देते हैं और भूल जाते हैं कि आदि में वही मसीह, पिता परमेश्वर के साथ सृष्टि के कार्य में उपस्थित और सक्रिय थे (यूहन्ना 1:1–3)। यीशु मसीह के प्रेम का प्रचार करते वक्त हम कई बार पुराने नियम में पिता परमेश्वर के न्याय के प्रति प्रेम को अनदेखा कर देते हैं या पवित्र आत्मा के अभी भी जारी कार्य को जो वो एक सहायक, परामर्शदाता और सत्य के आत्मा के रुप में कर रहें है उसे महत्व नहीं देते। संपूर्णता या समग्रता के सिद्धांत को ध्यान में रखते हुए ही हम परमेश्वर के नाना प्रकार के ज्ञानों का प्रदर्शन कर सकते हैं (इफिसियों 3:10)।

समग्र मिशन का आधार खुद परमेश्वर का स्वरुप और उनका चरित्र है। भजन 115:4–8 में लिखा है कि हम जिनकी उपासना करते हैं, हमारा चरित्र वैसा ही बनता जाता है। तब यह हमारा परम कर्तव्य बनता है कि हम परमेश्वर के संपूर्ण चरित्र को उनकी संपूर्णता में अपने जीवन और व्यवहार में प्रदर्शित करें और सिर्फ उन्हीं अंशों को नहीं जिन्हें हम पसंद करते हैं। जब हम परमेश्वर की संपूर्ण योजना को सृष्टि से लेकर मुक्ति और पुर्नस्थापन के विहंगम नजरिए से देखेंगें तो हम मिशन के प्रति संकीर्ण सोच और खतरों से बच पाएँगे। अन्य शब्दों में परमेश्वर का न्याय, दया, करुणा, प्रेम, गरीबों एंव शोषितों के प्रति उनका विशेष ख्याल, पवित्रता, सृजनशीलता, अनुग्रहकारिता, क्षमाशीलता इत्यादि सारे गुण उसके अनुयायियों के जीवन में भी लक्षित होने चाहिए। जब मसीहियों का जीवन इस प्रकार का होगा तो मसीही मिशन समग्र ही कहलाएगा।

मिशन का आरंभ– सृष्टि के शुरुआत से

परमेश्वर ने हमें एक महान गाथा सौंपी है, और हमें यह जिम्मेवारी दी है कि हम इसे सभी राष्ट्रों, कुलों और समुदायों को बतलाएं–कि कैसे सभी वस्तुओं की शुरुआत हुई–सृष्टि के वृतान्त से। क्योंकि सृष्टि के वृतान्त में ही मानव–जीवन के सभी आयामों और विभिन्न पहलुओं का आंरभ बताया गया है। परन्तु कई बार हम यह कहानी 'पाप में मनुष्य के पतन' या मनुष्य के पापी होने की सच्चाई से ही बताना शुरु करते हैं। ज्यादातर हमारे सुसमाचार प्रचार का मुख्य जोर पापों से पश्चाताप एंव उद्धार की जरुरत पर होता है। किन्तु यह साधारण ज्ञान है कि किसी भी कहानी को बीच से शुरु करना, कहानी बतलाने का अच्छा तरीका नहीं है। उत्पत्ति के प्रथम दो अध्यायों में वर्णित सृष्टि का वृतान्त समग्र–मिशन को समझने

2001.

[7]विनोद रामाचन्द्रन, "वाट इज इन्टीग्रल मिशन", माइका नेटवर्क इन्टीग्रल मिशनइनिशिएटिव,पृ.1.

[8]डेविड जे.बोश, *ट्रांसफार्मिंग मिशन*, (मेरी नोल, न्यूयार्कः ओरबिस) 1991, पृ.1.

"यह परमेश्वर के राज्य के दर्शन की उद्घोषणा और व्यवहारिक प्रदर्शन है– हमारे दैनिक जीवनों में, सामाजिक और सामुदायिक मसलों पर और राष्ट्र के जीवन और निर्माण ही नहीं वरन् सारी वसुधा या संपूर्ण सृष्टि को परमेश्वर के प्रभुत्व में लाने में हमारी सक्रिय भागीदारी है।"

के लिए हमें एक उचित ढांचा या आधारशिला प्रदान करता है। क्योंकि इसी वृतान्त से हम समझ पाते हैं कि जगत और जीवन के स्रोत और रचयिता खुद परमेश्वर हैं, जिन्होंने इसे अच्छा बनाया। उन्होंने मनुष्यों को अपनी समानता में सिरजा और अपनी सृष्टि पर शासन और देखभाल करने का अधिकार सौंपा। इन सच्चाईयों से ही मानवीय गरिमा एंव मानव–अधिकार, समानता, पहिचान, भोजन, कार्य, परिवार, समाज, व्यवस्था इत्यादि सारे सामाजिक मुद्दों को उनकी संपूर्णता में समझने में हमें मदद मिलती है। सृष्टि के विषय सही समझ विकसित नही कर पाने के कारण ही शायद कलीसिया परमेश्वर की योजना और उसके मूल–सिद्धान्तों और सृष्टि में दिए गए नियमों की अवहेलना करने की दोषी रही है।

सृष्टि का वृतान्त इस प्रकार से हम जो कुछ भी हैं उसके लिए आधार और अर्थ प्रदान करता है, साथ ही हम जो कुछ करते हैं या कैसे करें यह तय करता है। हम परमेश्वर द्वारा सिरजी दुनिया को उनकी भली इच्छा एंव उद्देश्य के अनुसार देखभाल करने और विकसित करने की जिम्मेवारी समझ पाते हैं। हम जीवन के समस्त क्षेत्रों पर उनके नियमों के अनुसार उनका राज्य स्थापित करने का प्रयास करते हैं।

पाप में पतन के परिणाम

मनुष्य के पाप में पतन के परिणामस्वरुप मनुष्य के तीन प्राथमिक रिश्तों–मनुष्य का परमेश्वर के साथ, मनुष्य का दूसरे मनुष्यों के साथ और मनुष्य का सृष्टि के साथ इन सभी रिश्तों में टूटन आ गई। हमारे समाज में जो भी समस्याएँ हैं चाहे वे गरीबी, युद्ध, हिंसा, नस्ली या जातीय भेदभाव, लैंगिक उत्पीड़न, जलवायु परिवर्तन, पर्यावरण प्रदूषण इत्यादि हों, इन तीन रिश्तों में आयी टूटन के नतीजे हैं। इस टूटन के फलस्वरुप हमने जीवन को भी दो भागों में बांट दिया– आत्मिक और गैर–आत्मिक। स्टेनली जोन्स इसे शैतान की "फूट डालो और राज करो की नीति" के रुप में परिभाषित करते हैं। इस झूठे विभाजन के कारण हम अपने जीवनों में परमेश्वर के समग्र शासन को स्थापित करने में विफल रहते हैं।

क्रूस का संदेश–महान मेल–मिलाप

यीशु मसीह के क्रूस पर बहाये रक्त के द्वारा हमारा सिर्फ व्यक्तिगत उद्धार ही नहीं होता वरन वैश्विक तौर पर सृष्टि की सारी वस्तुओं का मेल–मिलाप परमेश्वर से हो पाता है। "और उसके क्रूस पर बहे हुए लहु के द्वारा मेल–मिलाप करके, सब वस्तुओं का उसी के द्वारा से अपने साथ मेल कर ले, चाहे वे पृथ्वी पर की हों चाहे स्वर्ग में की" (कुलस्सियों 1:20)।

यही तो सुसमाचार या शुभ संदेश है। प्रभु यीशु द्वारा प्राप्त मुक्ति का स्वरुप काफी व्यापक है जिसमें सिर्फ पापों से माफी और उद्धार ही प्राप्त नहीं होता वरन सभी प्रकार के रिश्तों की टूटन का पुनः मेल–मिलाप और पुर्नस्थापन हो पाता है, और हम सभी एक नई सृष्टि के भाग बन जाते हैं (2 कुरिन्थियों 5:17)।

यीशु मसीह द्वारा दिया गया महान आदेश इस नजरिये से सिर्फ सुसमाचार प्रचार करने का ही नहीं वरन समस्त राष्ट्रों, कुलों और समुदायों को शिष्य बनाने का मतादेश है और उन सभी बातों को सिखाने का और पालन करने का जिसकी आज्ञा मसीह ने हमें दी है। परमेश्वर से सारे मन, सारी बुद्धि और सारी शक्ति से प्रेम और अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम करना उनकी महान आज्ञा है। पड़ोसी से प्रेम करना ही हमारा परमेश्वर के प्रति प्रेम दर्शाने का व्यवहारिक तरीका है, जैसे कि हम यूहन्ना की पत्री और याकूब की पत्री में सीखते हैं।

समग्रता का यह स्वरुप हम पूर्ण रुप से परमेश्वर के राज्य के दर्शन में देख पाते हैं जिसका प्रचार और प्रकटीकरण यीशु ने अपने जीवन और सेवकाई के द्वारा किया। परमेश्वर के राज्य के जीवन–मूल्य और व्यवहार संसार की मूल्य–व्यवस्था के विपरीत हैं।

इस तरह समग्र मिशन की हमारी समझ त्रिएक परमेश्वर के चरित्र पर आधारित है और परमेश्वर के वचन में दिए गए सम्पूर्ण प्रकाशन और मुक्ति की योजना के अनुरुप व्यापक है। यह सुसमाचार प्रचार करने की कोई रणनीति या तरीका नहीं वरन कलीसियायी और व्यक्तिगत तौर पर एक भरोसेमंद और सत्य–निष्ठ जीवन–शैली है, जिसमें सभी रिश्तों में सही संबंध और यीशु–मसीह द्वारा सिखाई शिक्षाओं का पूर्ण आज्ञा–पालन है। यह परमेश्वर के राज्य के दर्शन की उद्घोषणा और व्यवहारिक प्रदर्शन है– हमारे दैनिक जीवनों में, सामाजिक और सामुदायिक मसलों पर और राष्ट्र के जीवन और निर्माण ही नहीं वरन् सारी वसुधा या संपूर्ण सृष्टि को परमेश्वर के प्रभुत्व में लाने में हमारी सक्रिय भागीदारी है।

श्री राज मंडल, पिछले 25 वर्षों से समग्र मिशन के व्यवहार और प्रशिक्षण कार्य में संलग्न हैं। उनसे raajmondol@gmail.com *पर संपर्क किया जा सकता है।*

यीशु मसीह समग्र मिशन सेवकाई के सच्चे मिसाल

श्री अच्छे लाल यादव

समग्र मिशन पर लेखक द्वारा दिया गया प्रकाशन अत्यन्त प्रशंसनीय है। मसीही जगत में प्रभु यीशु मसीह की सम्पूर्ण योजना जो मानव जाति के लिए है, उसे कुछ ही विचारों में सीमित नहीं किया जा सकता है। मनुष्य की सृष्टि, परमेश्वर का स्वरुप, पाप में पतन के कारण एवं क्रूस का सन्देश, महान मेल–मिलाप, इन सभी महत्त्वपूर्ण शिक्षाओं के अनुपालन के बिना मनुष्य परमेश्वर की सृष्टि में अधूरा है।

लेख में प्रस्तुत गरीबी, युद्ध, हिंसा, नस्ली या जातीय भेद–भाव, लैंगिक उत्पीड़न, जलवायु परिवर्तन, पर्यावरण प्रदूषण इत्यादि के प्रति हर मनुष्य एवं मसीही कलीसिया को जागरूक एवं जिम्मेवार होने की आवश्यकता है। लेखक ने इस बात पर जोर दिया है कि एक मसीही या कलीसिया होने के नाते हमें सामाजिक कुरीतियों, बुराइयों और अत्याचार एवं अन्याय के प्रति आवाज उठाने की आवश्यकता है और हम यदि ऐसा करते हैं तो परमेश्वर की बड़ी आज्ञा– अपने परमेश्वर से प्रेम करना और अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम करने की आशा का अनुपालन करते हैं। लेख में इस बात पर जोर दिया गया है, कि विश्वास कर्म बिना अधूरा और मरा हुआ है (याकूब 2:17)।

लेख में 1982 के दौरान ग्रेंड रेपिड्स मिशिगन सभा के दौरान समग्र मिशन पर हुए चर्चाओं का भी जिक्र किया गया है जिसमें यह कहा गया है कि सामाजिक कार्य, सुसमाचार प्रचार के लिए एक पुल की तरह है। मेरा यह मानना है कि समग्र मिशन के ऊपर इस प्रकार का कथन एक अमान्य और अधूरी परिभाषा है। बहुधा भारत में मसीही मिशन संस्थाओं द्वारा इसको ऐसे ही सोचा और समझा गया है और कहीं न कहीं लोगों का सामाजिक सेवा के पीछे यह स्वार्थ भी रहा है। अक्सर इन्हीं कारणों से अन्य विश्वास के लोग हमारे सामजिक कार्यों की अवहेलना करते हैं और इस बात का दोष लगाते हैं कि मसीही सामाजिक कार्य के पीछे मूल उद्देश्य धर्मान्तरण है। जबकि समग्र मिशन के नजरिये से यह बिलकुल असत्य कथन है। प्रभु यीशु ने अपने सेवाकाल के दौरान लोगों को भोजन खिलाया, रोग और दुष्टात्माओं से पीड़ित लोगों को चंगा किया, मुर्दों को जिलाया और नाना प्रकार के और भी सामाजिक कार्य किये, परन्तु इस बात का बाइबल में कहीं भी जिक्र नहीं है कि सब उसके पीछे हो लिए। प्रभु यीशु मसीह का इस दुनिया में आने का उद्देश्य यही था कि लोग जीवन पाएं और बहुतायत का जीवन पाएं (यूहन्ना 10:10)। उसके सामाजिक सेवा के पीछे उसका रत्ती भर का कोई स्वार्थ नहीं था।

लेख में समग्र मिशन को समझने के लिए त्रिएक परमेश्वर के व्यक्तित्व का भी जिक्र किया गया है जो अपने आप में एक अच्छा उदाहरण है। जिस प्रकार हम त्रिएक परमेश्वर के व्यक्तित्व को अलग नहीं कर सकते हैं या तो किसी को छोटा या बड़ा करके नहीं देख सकते हैं उसी प्रकार समग्र मिशन में भी हम सुसमाचार प्रचार और सामाजिक कार्य को कम या ज्यादा महत्त्व नहीं दे सकते हैं। अतः सुसमाचार प्रचार और सामाजिक कार्य एक सिक्के के दो पहलू हैं और एक के बिना दूसरे का अस्तित्व अधूरा या अपूर्ण है। समग्र मिशन पर संकलन किये गए विचारों, सन्दर्भों, सच्चाइयों एवं कठिन परिश्रम के प्रति लेखक को हार्दिक धन्यवाद देता हूँ।

यदि हम समग्र मिशन को और विस्तार रूप में देखें और समझें तो यीशु मसीह का जीवन हमारे लिए एक अनूठा उदाहरण होगा। हम पाएंगे कि समग्र मिशन के ऊपर लेखक द्वारा दिए गए उपरोक्त बातें यीशु के जीवन में कूट–कूट कर भरी थीं जिसको उन्होंने अपने जीवन काल में करके दिखाया। उनकी कथनी और करनी में कोई फर्क नहीं था और इसलिए वे समग्र मिशन सेवकाई के एक सच्चे मिसाल के रूप में जाने जाते हैं। उनके इस समग्र मिशन सेवकाई को आज सम्पूर्ण विश्व के मसीहियों और कलीसियाओं को जानने और उसके अनुसार कार्य करने की आवश्यकता है।

प्रभु यीशु मसीह समग्र मिशन सेवकाई के सच्चे मिसाल

प्रभु यीशु मसीह का क्रूस का बलिदान परमेश्वर और मनुष्य, मनुष्य और मनुष्य तथा सृष्टि के मेल–मिलाप के लिए एक बड़ा सन्देश है। इस दुनिया में पाप का प्रवेश सम्पूर्ण सृष्टि के लिए एक बड़ी क्षति थी। परन्तु यीशु के बलिदान ने उन टूटे हुए सम्बन्धो को पुनः स्थापित किया। पहाड़ी उपदेश में लिखा है कि, "धन्य हैं वे, जो मेल कराने वाले हैं, क्योंकि वे परमेश्वर के पुत्र कहलायेंगे" (मत्ती 5:9)। प्रभु यीशु मसीह की शिक्षाओं में हम देखते हैं कि मेल–मिलाप के बिना परमेश्वर को प्रसन्न करना मुश्किल है (मत्ती 18:15)। पतरस ने जब यीशु से पूछा कि मै अपने भाई को कितनी बार क्षमा करूँ, क्या सात बार, यीशु ने कहा सात गुणा सत्तर बार (मत्ती 18:21–22)। प्रभु यीशु की इस मेल–मिलाप की सेवकाई का उद्देश्य संबंधों और शांति को पुर्नस्थापित करना था।

प्रभु यीशु ने अपने सेवा काल के दौरान गरीब, अनाथ और विधवाओं की सुधि ली। जो लोग समाज के मुख्यधाराओं से कोसों दूर थे उनको वे ढूढ़ने और उनका उद्धार करने के लिए आये थे (लूका 19:10)। उनका मिशन गरीबों को न्याय दिलाने के लिए था। नासरत घोषणा पत्र में यीशु अपने मिशन और आने के मकसद को बयान करते हैं कि उनका अभिषेक कंगालों को सुसमाचार सुनाने, बंदियों के छुटकारे, अंधों को दृष्टि पाने और कुचले हुओं को छुड़ाने

के लिए हुआ है (लूका 4:18)। इस पद का मेल लैव्यव्यवस्था 25:10–17) में है जिसका मूल मतलब जुबली वर्ष से है और जिसका यीशु यशायाह नबी की पुस्तक 61:1–3 से हवाला देते हैं। जुबली गुलाम लोगों के लिए और जो लोग गरीबी के कारण अपनी भूमि बंधक रख देते थे उन के लिए एक बड़े छुटकारे का सन्देश था। परमेश्वर नहीं चाहता था कि गरीबों के साथ अन्याय हो। अतः प्रभु यीशु का मिशन ऐसे लोगों के लिए एक छुटकारे का सन्देश था।

बीमार, लाचार और नाना प्रकार के बीमारियों से पीड़ित एवं दुष्टात्मा से ग्रसित लोगों के ऊपर प्रभु यीशु ने तरस खाया और उन्हें चंगा किया। यीशु मसीह चाहते थे कि लोग शारीरिक रूप में स्वस्थ और भले चंगे रहें। वे इस कार्य को अपने शिष्यों के जीवन में भी देखना चाहते थे और इस लिए उन्होंने उन्हें भेजते समय बीमारों को चंगा करने, दुष्टात्माओं को निकालने, मरे हुओं को जिलाने और कोढ़ियों को शुद्ध करने का अधिकार भी दिया (मत्ती 10:6–8, लूका 10:1–10)। एक बार तो प्रभु यीशु ने यह भी कहा कि "भले चंगों को वैद्य की आवश्यकता नहीं, परन्तु बीमारों को है: मैं धर्मियों को नहीं, परन्तु पापियों को बुलाने आया हूँ" (मरकुस 2:17)। उस समय का समाज ऐसे लोगों को पापी की श्रेणी में रखता था जो बीमार, जिसको लहू बहने की बीमारी होती थी, जो दुष्टात्माओं से ग्रसित होते थे, जो शारीरिक तौर पर अक्षम होते थे और जो कर वसूली करते थे। आज भी हमारा समाज ऐसी समस्याओं से परे नहीं है। लोगों की दुर्दशा को देखकर प्रभु यीशु ने उन पर तरस खाया और अपने चेलों का आह्वान किया कि वे स्वामी से प्रार्थना करें कि वह ऐसे लोगों की देख–रेख के लिए मजदूर भेजे (मत्ती 9:35–38)। प्रभु यीशु लाजर के मृत्यु पर रोया (यूहन्ना 11:35)। रोनाल्ड जे साइडर लिखते हैं कि, यीशु मसीह की सेवा शारीरिक तौर पर अक्षम लोगों, बच्चों, शराबी, वेश्याओं और कोढ़ियों (लूका 7:32–50, 19:1–10), गरीबी में जीवन यापन करने वाले लोगों और उनके उत्थान के लिए थी[1] जिसको समाज अशुद्ध या अपवित्र कहता था (मरकुस 1:41)। प्रभु यीशु ने बिना भेद–भाव के उन्हें गले लगाया, उन्हें छुआ और उन्हें चंगा किया। प्रभु यीशु मसीह का यही समग्र मिशन था। ये सभी बातें और कार्य मिलकर प्रभु यीशु में सम्पूर्ण सुसमाचार प्रचार और समग्र मिशन की पूर्ति करते हैं। परन्तु बहुधा हम और हमारी कलीसियाएँ इन सभी कार्यों को एक साथ समझने और करने में चूक जाती हैं।

प्रभु यीशु मसीह ने ऐसे लोगों से प्रेम किया और उन्हें गले लगया जिनको समाज ने तिरस्कृत कर दिया था। ऐसे लोगों को सम्मान दिलाने का कार्य उन्होंने किया। उनका जक्कई के घर में जाना, उसके साथ भोजन करना, यहूदी धर्मगुरुओं को बहुत बुरा लगा परन्तु यीशु ने इन बातों की परवाह नहीं की और जक्कई के विश्वास को देखकर यीशु ने कहा आज इस घर में उद्धार आया है। जक्कई नाटा था और धर्मगुरुओं के दृष्टि में एक पापी था परन्तु यीशु के लिए वह परमेश्वर के स्वरुप में सिरजा गया व्यक्ति था। यीशु ने उससे प्रेम दर्शाया, उसके पापों को क्षमा किया और उसका जीवन पूर्ण रूप से बदल गया।

[1]Ronald J. Sider, Good News and Good Works, (Baker Books: Grand Rapids, Michigan), 2001, P. 63

प्रभु यीशु ने बारह वर्ष से लहू बहने वाली एक स्त्री को चंगा किया और उसे भीड़ में सब के सामने कहा– जा बेटी तेरे विश्वास ने तुझे चंगा किया, जो शारीरिक चंगाई से बढ़कर था। यीशु ने ऐसे लोगों के सम्मान और उनके पहिचान के लिए कार्य किया (लूका 5:43–47)। यीशु ने उस अंधे भिखारी को चंगा किया और उसे समय दिया जिसको यीशु के चेले यीशु के पास आने से मना कर रहे थे (लूका 18:35–43)। प्रभु यीशु मसीह के लिए ऐसे लोगों को पहचान दिलाना और उनके सम्मान के लिए कार्य करना उनकी प्राथमिकता थी। ये लोग उनकी सेवकाई के केंद्रबिंदु थे। प्रभु यीशु की सेवा एक विशिष्ठ क्षेत्र पर आधारित नहीं थी बल्कि मनुष्य के चौतरफ़ा विकास के लिए थी। व्यभिचार में पकड़ी गयी स्त्री को जब उसके पास लाया गया तो उसने समाज के धर्मगुरुओं से कहा– वही पत्थर मारे जिसने कभी पाप न किया हो (यूहन्ना 8:1–11)। प्रभु यीशु ने ऐसी व्यवस्था का खंडन किया जो सर्व समाज के हित के विरोध में था।

"प्रभु यीशु ने बिना भेद–भाव के उन्हें गले लगाया, उन्हें छुआ और उन्हें चंगा किया। प्रभु यीशु मसीह का यही समग्र मिशन था। ये सभी बातें और कार्य मिलकर प्रभु यीशु में सम्पूर्ण सुसमाचार प्रचार और समग्र मिशन की पूर्ति करते हैं। परन्तु बहुधा हम और हमारी कलीसियाएँ इन सभी कार्यों को एक साथ समझने और करने में चूक जाती हैं।"

यीशु ने महिलाओं को सम्मान और समानता का अधिकार दिलाने के लिए भी कार्य किया। यीशु के समय में महिलाओं की स्थिति बहुत ही दयनीय थी। उस समय में महिलाओं का समाज में कोई स्थान नहीं था। लेखक जैकब वनकाल एस.वि.डी. लिखते हैं कि यीशु मसीह के समय में पत्नी को पति की संपत्ति माना जाता था[2]। साइडर लिखते हैं कि सावर्जनिक स्थान में पुरुषों का महिलाओं के साथ होना अति अपमान की बात मानी जाती थी और कचहरी में एक महिला के गवाही का कोई मूल्य नहीं होता था। उस ज़माने में एक स्त्री का पंचग्रन्थ का स्पर्श करना पंचग्रन्थ को जला देने के बराबर था[3] । ऐसी विचारधारा और घिनौने सोच की प्रभु यीशु ने घोर निंदा की और महिलाओं को समानता का दर्जा दिलाने के लिए कार्य किये। यूहन्ना 4:27 में प्रभु यीशु मसीह की मुलाकात सार्वजानिक स्थान में उस सामरी स्त्री से होती है जिसको लोग अछूत बोलते थे और ऐसी स्त्री से मिलना

[2]Jacob Kavunkal SVD, "Christian Mission at the Crossroads of Development: Biblical and Magisterial Persepective" in Mission and Development: God's Work or Good Works? Ed. Matthew Clarke, (Continuum International Publishing Group: York Road, London), 2012, P 35.

[3]Sider, Good News and Good Works, P. 65

सम्मानजनक नहीं माना जाता था, परंतु यीशु तो उसके हाथ का पानी पीना चाहते थे (यूहन्ना 4:7) उन्होंने महिलाओं को परमेश्वर के वचन की शिक्षा दी (लूका 10:38–42)। वे सार्वजानिक स्थान में एक पापिनी स्त्री से मिले जिसने अपने आँसुओं से यीशु के चरण को धोया और बहुमूल्य इत्र से उसके पावों को पोंछा (लूका 7:36–50)। यीशु मसीह ने यहाँ तक कि मूसा के तलाक व्यवस्था की शिक्षा का भी खंडन किया (व्यस्थाविवरण 24:1–2) और पति–पत्नी को जीवन पर्यन्त प्रेम रूपी वाचा में एक साथ रहने पर जोर दिया (मरकुस 10:1–12)। महिलाओं ने भी उनके इस व्यवहार के कारण उनकी सेवकाई में महत्वपूर्ण योगदान दिया (यूहन्ना 8:1–3)।

प्रभु यीशु ने समाज में फैले अंधविश्वास और धर्म अगुओं द्वारा किये गए अत्याचार के प्रति भी आवाज उठाई और उनके परम्पराओं के प्रति उन्हें चुनौती दिया। ऐसे धर्म के ठेकेदारों को उन्होंने पाखंडी कहा। उन्होंने उनके द्वारा दिए गए दान की भी अवहेलना की और उन्हें यह कहा कि तुम सौंफ और जीरे का दसमांश तो देते हो परन्तु न्याय, दया और विश्वास को छोड़ देते हो (मत्ती 23:23)। यीशु के लिए न्याय, दया और विश्वास उतना ही महत्त्वपूर्ण था जितना कि दान देना। प्रभु यीशु ने यहूदी परम्पराओं और उनके धर्मगुरुओं के पाखंडी कार्यों के लिए फटकार लगायी (यूहन्ना 2:13–17)। एक बार उन्होंने कहा 'क्या मनुष्य विश्राम दिन के लिए बनाया गया है या विश्राम दिन मनुष्य के लिए' (मरकुस 2:27)। प्रभु यीशु ने विश्राम दिन में बहुत से बीमारों को चंगा किया (मत्ती 12:10–13)। मनुष्य की जरुरत और उसका मूल्य यीशु के लिए विश्राम दिन से ज्यादा महत्त्व रखता था। प्रभु यीशु ने उस अच्छे सामरी के भले कार्य का बखान किया जो उसने उस व्यक्ति के साथ किया जिसे डाकुओं ने अधमरा छोड़ दिया था जबकि याजक और लेवी इस कार्य से मुँह मोड़कर चले गए थे (मत्ती 10:25–27)।

हम अक्सर दूसरों का न्याय करने लगते हैं परन्तु प्रभु यीशु ने ऐसा नहीं किया। उनकी शिक्षाएं निष्पक्ष थी। पहाड़ी उपदेश में उन्होंने लोगों इस बात कि शिक्षा दी कि हम दूसरों पर दोष न लगाएं (मत्ती 7:1–5)। हमारे समाज में लोग एच.आई.वी., एड्स जैसे बीमारियों, कुष्ठ रोग, विभिन्न प्रकार की विकलांगता से पीड़ित लोगों, या मानव तस्करी, घरेलू हिंसा के शिकार व्यक्तियों को भला बुरा कहने और उनका न्याय करने में जरा भी चूक नहीं करते हैं, परन्तु यीशु ने ऐसा नहीं किया।

प्रभु यीशु की सेवा एक दास रूपी सेवा थी। मरकुस 10:42–45 में प्रभु मसीह कहते हैं कि मनुष्य का पुत्र इसलिए नहीं आया कि उसकी सेवाटहल की जाए पर इसलिये आया कि आप सेवाटहल करे। यीशु मसीह ने इस प्रकार के कार्यों को करके उन्हें दिखाया और उन्होंने अपने शिष्यों का पैर धोया (यहुन्ना 13:1–17)। यहूदी लोग तो एक ऐसे राजा की बाट जोह रहे थे जो रोमी साम्राज्य को उखाड़ फेंकेगा परन्तु प्रभु यीशु ऐसा राजा नहीं था। प्रभु यीशु इस प्रकार की विचार–धारा के विपरीत था और ऐसे नेतृत्व का उन्होंने तिरस्कार किया और उसने कहा की तुम सुन चुके हो कहा गया है कि अपने पड़ोसियों से प्रेम करो और बैरियों से बैर परन्तु मैं तुम से कहता हूँ कि तुम अपने दुश्मनों से प्रेम करो और अपने सताने वालों के लिए प्रार्थना करो (मत्ती 5:43–47)।

प्रभु यीशु मसीह की समग्र मिशन की सेवकाई मनुष्य के चौमुखी विकास के लिए थी। उन्होंने अपने सेवकाई के दौरान मनुष्य और सृष्टि के सम्पूर्ण पुर्नस्थापना के लिए बात की और शिक्षा भी दी। प्रभु यीशु की शिक्षाओं में परमेश्वर का राज्य मुख्य विषय रहा है।

प्रभु यीशु मसीह की समग्र मिशन की सेवकाई मनुष्य के चौमुखी विकास के लिए थी। उन्होंने अपने सेवकाई के दौरान मनुष्य और सृष्टि के सम्पूर्ण पुर्नस्थापना के लिए बात की और शिक्षा भी दी। प्रभु यीशु की शिक्षाओं में परमेश्वर का राज्य मुख्य विषय रहा है। उनके शिक्षाओं में ऐसे बहुत से दृष्टान्त हैं जिसमें पर्यावरण, जीव–जंतुओं) पेड़–पौधों का जिक्र किया गया है। पहाड़ी उपदेश में वे किसी वस्तु की चिंता न करने के लिए बोलते हैं और वह इस बात को बताते हैं कि परमेश्वर आकाश के पक्षियों, जंगली सोसनों और मैदान के घास की भी चिंता करता है (लूका 12:27–40, मत्ती 6:25–28)। यूहन्ना 3:16 में प्रभु यीशु मसीह सिर्फ मनुष्य के ही उद्धार या छुटकारे के लिए ही नहीं आया था परन्तु वह सम्पूर्ण सृष्टि के उद्धार और छुटकारे के लिए क्रूस पर बलिदान हुआ। कुलुस्सियों की पत्री 1:18–20 में लिखा है कि पिता की प्रसन्नता इसी में है कि उसमें सारी परिपूर्णता वास करे, और उसके क्रूस पर बहे हुए लहू के द्वारा मेलमिलाप कर के, सब वस्तुओं का उसी के द्वारा अपने साथ मेल कर ले)चाहे वे पृथ्वी की हों चाहे स्वर्ग की। मरकुस 16:15 में प्रभु यीशु मसीह अपने चेलों को सम्पूर्ण सृष्टि के लिए सुसमाचार प्रचार के लिए भेजते हैं। प्रकाशितवाक्य 21:1 के अनुसार यीशु के आगामी राज्य में सब कुछ नया हो जायेगा।

निष्कर्ष

प्रभु यीशु मसीह के उपरोक्त समग्र मिशन की सेवकाई को देखने के बाद हम इस निष्कर्ष पर आते हैं कि उसकी सेवकाई सम्पूर्ण सृष्टि के छुटकारे और उसके चौमुखी विकास के लिए थी। उनके क्रूस की मृत्यु उन टूटे हुए रिश्तों को जोड़ने और समस्त सृष्टि के छुटकारे के लिए एक महान सन्देश था। उसकी समग्र मिशन की सेवकाई अनाथ, विधवाओं, लाचारों एवं नाना प्रकार की समस्याओं से पीड़ित लोगों के सम्पूर्ण छुटकारे के लिए थी। उन्होंने अंधविश्वास, समाज में फैली कुरीतियों, अधर्म और अन्याय के प्रति आवाज उठाई। उन्होंने महिलाओं के सम्मान और उनके अधिकारों के लिए कार्य किया। बच्चों का उदहारण दिया और उनसे प्रेम किया। उन्होंने सम्पूर्ण मानव जाति को सबसे बड़ी आज्ञा दी कि हम परमेश्वर से प्रेम करें और अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम करें जो सभी आज्ञाओं का सार है और सभी आज्ञाएं इसमें पूर्ण होती हैं। प्रभु यीशु की सेवा समग्र थी जिससे हमें और हमारी कलीसियाओं को आज एक बड़ी शिक्षा लेने की आवश्यकता है और वैसा करने की जरुरत है।

श्री अच्छे लाल यादव, एफिकोर में मेनेजर, नेटवर्किंग और मोबिलाईजेसन् के रूप में कार्यरत हैं। उन्हें इस पते पर संपर्क किया जा सकता है
achhe@eficor.org

समग्र मिशन ऐतिहासिक और सामाजिक नजरिये से

रेव्ह डा० मोनोदीप डैनियल

"मिशन" शब्द का प्रयोग अनेक प्रकार से किया जाता है। सरकार भी इसको विदेशों में अपने काम को संबोधित करने के लिए करती है। जैसे कि लंदन में भारतीय दूतावास के कार्य को डिप्लोमेटिक मिशन कहा जाता है। परन्तु "मिशन" शब्द का प्रयोग मसीही–दुनिया में सबसे पहले किया गया था।

यह सच है कि बाईबिल में "मिशन" शब्द का उपयोग नहीं किया गया है,परन्तु जिस सेवा कार्य को इस शब्द से इंगित किया जाता है,उसका उल्लेख बाईबिल में भरपूर है। अतः "प्रेरितों के कार्य" नामक पुस्तक में प्रभु यीशु के शिष्यों के सेवा कार्य को मिशनरी कार्य कहना एकदम सही होगा।

यह मानना सही होगा कि मिशनरी सेवा कार्य पवित्र–आत्मा की प्रेरणा से ही संपन्न होता है, परन्तु इसे समझने और इसको व्यवहारिक रूप देने के विभिन्न दृष्टिकोण हैं। हर दृष्टिकोण किसी सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भ में उभरी ताकि उस समय के जरूरत के अनुसार मिशनरी संस्था अपने सेवा कार्य का आकार जनता के हित के लिए बना सके।

हमारी वर्तमान भारतीय सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियों और समस्याओं से जूझती जनता की मदद के लिए "समग्र–मिशन" की आवश्यकता है। इस दृष्टिकोण को समझने के लिए यह जरूरी है कि हम बीते शताब्दियों के मसीही विचारकों की विचारधाराओं से अवगत हों।

मसीही दुनिया में सबसे पहले रोमन–कैथोलिक धर्मसमाजियों ने मिशन सेवा कार्य एक बड़े पैमाने में लिया। यह पोप की अनुमति एवं कैथोलिक देशों के शासकों की सुरक्षा के अंतर्गत दुनिया भर में फैल गया।

शासकों की सुरक्षा उनके राजनैतिक अभिलाषाओं से अलग नहीं किया जा सकता था। यह जरूरी था कि उनके कालोनी की जनता अपने शासकों के प्रति वफादार रहे। "यथा राजा तथा प्रजा" के सिद्धांत के अनुसार धर्मांतरण पर उचित जोर दिया गया। फलस्वरूप कैथोलिक संप्रदाय की संख्या में काफी वृद्धि हुई। परन्तु वृद्धि के इस रूप को समग्र–मिशन नहीं माना जा सकता था। क्योंकि इसका लक्ष्य विदेशी शासन की पकड़ को मजबूत करना था। भारत में कैथोलिक–मिशन पुर्तगालियों की सुरक्षा में गोवा एवं मेंगलूर एवं केरल के क्षेत्रों में कार्यरत रहा। परन्तु प्रोटेस्टेंट मिशनरियों की सेवा 1813 के बाद शुरू हुई क्योंकि उससे पहले ईस्ट इंडिया कंपनी मसीही धर्म प्रचार की अनुमति नहीं देती थी।

यह सच है कि बाईबिल में "मिशन" शब्द का उपयोग नहीं किया गया है,परन्तु जिस सेवा कार्य को इस शब्द से इंगित किया जाता है,उसका उल्लेख बाईबिल में भरपूर है।अतः "प्रेरितों के कार्य" नामक पुस्तक में प्रभु यीशु के शिष्यों के सेवा कार्य को मिशनरी कार्य कहना एकदम सही होगा।

उन वर्षों में धर्म प्रचार को समाज सेवा से अलग नहीं माना जाता था। समाज सेवा विशेषकर अनाथालय एवं महिला आश्रम को प्राथमिकता देता था। ऐसी संस्थाओं के प्रांगणों में प्रार्थना–भवन याने गिरिजाघर में धर्म अध्ययन भी किया जाता था।इस शताब्दी में मसीही विचारकों की दृष्टि में मिशन–सेवा कार्य का लक्ष्य "चैरिटी" था। इस अर्थ में मिशनरी की सेवाएँ गरीबों के हित में मुफ्त थीं। इसके बाद मिशन–सेवा कार्य में नई सोच आई।

माना कि "मुफ्त" सुविधाएँ और सेवाएँ जरूरतमंदों के लिए राहत के रूप में सिद्ध हुईं, परन्तु इस तरीके का लक्ष्य सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तन नहीं था। न सिर्फ मुफ्त–सेवाओं का लाभ उठाने वालों की संख्या इने–गिने रही पर उससे भी कम संख्या में लोगों ने मसीहियत अपनाई। बल्कि बदनामी यह हो गई कि मुफ्त सेवाओं का लालच देकर धर्म परिवर्तन किया जा रहा है। बीसवीं सदी के अंत में मिशन–सेवा कार्य का दृष्टिकोण एक बार फिर बदलने लगा। इसका कारण कम्यूनिस्ट विचारधारा थी। जो श्रमिक वर्ग के लिए एक बड़ा आकर्षण बन गई थी। इससे प्रभावित दुनिया की लोकतांत्रिक और राजतांत्रिक सरकारों का ध्यान जनता के कल्याण की तरफ होने लगा। इस शताब्दी के अंतिम दशक में "वैलफेअर स्टेट" का सिद्धांत भारत में भी प्रचलित हो गया था। यह विचारधारा मिशन–सेवा कार्य में मिशनरियों ने भी अपनाई। फलस्वरूप मिशन–सेवा कार्य सामाजिक प्रगति पर जोर देने लगा। यह काम मिशन–स्कूलों तथा मिशन–अस्पतालों के माध्यम से किया जाने लगा। इन संस्थाओं में न केवल रोजगार को बढ़ावा मिला,अपितु मसीही–समाज के लोगों को उच्चतर शिक्षा एवं प्रशिक्षण के लिए भी प्रोत्साहन मिला।

मसीही संस्थाएँ जानी–मानी हो गईं और इनके मसीही विश्वासी निर्देशक और संचालक भी उच्च वर्ग में शामिल हो गए। हालांकि मिशन संस्थाओं के कल्याण सेवाओं से समाज प्रगतिशील हुआ।

परन्तु इस दृष्टिकोण का लक्ष्य सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तन नहीं, पर गरीबी हटाना था।

कम्यूनिस्ट विचाराधारा के हिंसात्मक क्रांति के सिद्धांत को सबने नहीं अपनाया परन्तु इसमें निहित "पीपुल्स मूवमेंट" या जन–आन्दोलन आकर्षक सिद्ध हुआ। इस दृष्टिकोण में सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तन,जन–आन्दोलन तथा हिंसात्मक क्रांति से किये जाने पर जोर था। इनके विचारकों ने मिशन–संस्थाओं के "मुफ्त" सेवाओं तथा सत्ता एवं सरकार के "कल्याण" कार्यक्रमों की आलोचना की। उनकी धारणा थी कि शोषित समाज को कोई बाहर की एजेंसी नहीं,अपितु शोषित लोगों को खुद ही मुक्त होना पड़ेगा। उन्हें खुद अपना इतिहास बनाना है। इसके लिए उन्हें जन–आन्दोलन चलाना तथा अपने शोषित समुदाय को संगठित करना पड़ेगा। बाहर से मिशन–कार्यकर्ताओं का काम केवल इन लोगों को सशक्त एवं संगठित करना है। यह काम जन–चेतना जगा कर किया जा सकता है। यह दृष्टिकोण अनेक मिशन–सेवी–संस्थाओं ने अपनाई जिसके कारण कई जन–आंदोलनों का उदय हुआ।

इस दृष्टिकोण का जोर गरीबी के अन्याय को दूर करना तथा पूंजीवाद के खिलाफ संघर्ष करना था। सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तन की चेतना तो थी,पर क्रांति के हिंसक पहलू से चर्च के अधिकारी सहमत नहीं थे। इसी दौरान दुनिया में महत्वपूर्ण बदलाव आ रहे थे। बीसवीं शताब्दी के अंत में सोवियत संघ समाप्त हो गया जिससे यूरोप एवं एशिया का मानचित्र ही बदल गया। पोप जॉन–पॉल–द्वितीय की प्रेरणा से दुनिया के अनेक लोग पुरानी सोवियत सत्ता से आजाद होते गए। इससे कम्यूनिस्ट दर्शन का खोखलापन साबित हो गया। यह साफ था कि हिंसात्मक क्रांति,जो कम्यूनिस्ट विचारधारा का आधार थी और जिसके द्वारा कम्यूनिस्ट पार्टियों ने अनेक राष्ट्रों में अपनी सत्ता स्थापित करी,दुनिया की समस्याओं का निवारण नही कर सकती थीं। मिशन–सेवा कार्य को भी अपने दृष्टिकोण में अब सुधार लाने की जरूरत थी।

1990 के दशक में दलित दृष्टिकोण तथा दलित धर्मविज्ञान (थियोलाजी) का उदय हुआ। यह स्पष्ट था कि भारतीय समाज और संस्कृति का आधार और आकार वर्ण–आश्रम व्यवस्था पर आधारित था। इसी दौरान डा०भीमराव रामजी अंबेडकर के लेख एवं विचार की प्रतियों का प्रकाशन 22 खण्डों में वितरण हो रहा था। भारतीय समाज में ऊँच–नीच, छुआ–छूत, अमीरी–गरीबी,भेद–भाव का मूल, वर्ण–आश्रम–व्यवस्था ही थी। गुजरी शताब्दियों की मिशन सेवा जिस विचारधारा पर आधारित थी वह जाति–व्यवस्था से जूझते समाज की सेवा पूर्ण रूप से करने में असमर्थ थी,अपितु मिशन सेवा–कार्य समाज में कोई भी परिवर्तन लाने में असमर्थ साबित हो रहा था। मिशन सेवा कार्य को समाज के संदर्भ से जुड़ने के लिए आजाद भारत का संविधान एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकता है। यह मानना सही है कि राजनीति की पहल भारतीय संविधान पर आधारित है। इसका अर्थ यह है कि यदि बाईबिल के संदेश का प्रसार और संविधान में निहित नागरिकों के अधिकार एवं कर्त्तव्यों से जनता को अवगत कराया जाए तो सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तन संभव हो सकता है।

न सिर्फ नागरिकों को बाईबिल एवं संविधान के ज्ञान से अवगत कराया जाना चाहिए, परन्तु नागरिकों को उनके मूल–अधिकार दिलवाना मिशन का प्रमुख कार्य होना चाहिए।

व्यवहारिक रूप में इसके दो अर्थ हैं– पहला यह कि लोगों का "विचार परिवर्तन" करने में मिशन को मजबूत करना। और दूसरा यह कि लोगों को अपने हक की सुरक्षा करने में मदद करना। आजाद भारत में कई सेवाएँ जो अब तक मिशन करती आ रही थी, वह सरकार की जिम्मेदारी बन गई है,जैसे स्वच्छ पर्यावरण, बीमारियों की रोक–थाम, चिकित्सा, शिक्षा प्रशिक्षण एवं रोजगार।

यह सरकार की जिम्मेदारी है कि यह सेवाएँ जनता को उपलब्ध कराई जाए क्योंकि यह नागरिकों का हक है। इसलिए नागरिकों को अपने हक मांगने के लिए संगठित करना अब मिशन की सेवा होनी चाहिए।

आजाद भारत के संदर्भ में नागरिकों का विचार परिवर्तन करना,उनको अपने मूल–अधिकारों की सुरक्षा करने में मदद करना,तथा उनको अपने हक की मांग सरकार से करने में मदद करना मिशन–सेवा का प्रमुख कार्य होना चाहिए।

आजाद भारत के संदर्भ में नागरिकों का विचार परिवर्तन करना, उनको अपने मूल–अधिकारों की सुरक्षा करने में मदद करना, तथा उनको अपने हक की मांग सरकार से करने में मदद करना मिशन–सेवा का प्रमुख कार्य होना चाहिए। ऊपर के चिंतन में जो तीन विषय उठाए गये हैं उनमें से हम "विचार–परिवर्तन" को सबसे पहले समझने की कोशिश करें।

"विचार–परिवर्तन" का अर्थ है जाति–व्यवस्था की विचारधारा का खण्डन करके इंसाफ की विचारधारा को अपनाना। इंसाफ तीन चीजों से जुड़ा है अर्थात् सामाजिक समानता, आजादी और भाईचारा। इस युग में इंसाफ के दायरे में स्वच्छ पर्यावरण तथा जीव–जंतुओं की सुरक्षा भी अनिवार्य है। मांग केवल चिकित्सा की ही नहीं है परन्तु स्वस्थ रहने के लिए स्वच्छ पर्यावरण की भी है।

मिशन–सेवा कार्य को आज के संदर्भ में सही रूप–रेखा प्रदान करने को हम "समग्र–मिशन" कह सकते हैं। समग्रता का अर्थ है कि आध्यात्मिकता को हम इंसाफ की विचारधारा, मानव–अधिकार,नागरिक–हक और पर्यावरण के मुद्दों से अलग नहीं कर सकते हैं। जीवन के इन सब पहलुओं को मिशन–सेवा में समग्रित करने की आवश्यकता है। जब मसीही–सेवा कार्य ऐसा आकार ले लेता है तो इसे हम "समग्र–मिशन" से सम्बोधित करते हैं।

डा.रेव्ह. मोनोदीप डैनियल, दिल्ली ब्रदरहुड सोसाईटी के अध्यक्ष और सेन्ट स्टीफन्स कालेज, दिल्ली के डीन हैं। उन्हें इस पते पर संपर्क कर सकते हैं monodeepdaniel173@gmail.com

डा.विलियम कैरी : भारत में समग्र मिशन के जनक

रेव्ह. राम सूरत

प्रस्तावनाः

डा.विलियम कैरी को आधुनिक मिशन का जनक ही नहीं अपितु भारत में समग्र मिशन का जनक कहना एक अतिशयोक्ति न होगी। कैरी ने अपनी सम्पूर्णता की सेवकाई के माध्यम से भारत की कलीसिया को समग्रता के मिशन का नमूना प्रस्तुत किया। कैरी का जन्म इंगलैण्ड के पौलेरसपुरी नामक छोटे गांव के एक गरीब परिवार में 17 अगस्त 1761 को हुआ। उन्हें कोई औपचारिक शिक्षा नहीं मिली। उनके कमाई का मुख्य जरिया जूता बनाने का या मोची का काम था। भारत आने और उसके पश्चात उनके पूरे निवास के दौरान, उन्हें ब्रिटिश उपनिवेशवादियों द्वारा परेशान किया गया, उनकी मिशन भेजने वाली एजेंसी ने उन्हें त्याग दिया और उनकी मदद करने के लिए भेजे गये युवा मिशनरियों द्वारा उनका विरोध किया गया। पर इन सब भयावह उतार–चढ़ाव के बावजूद वे मिशन इतिहास के एक बड़े प्रभावशाली व्यक्ति बन गये।

उनके पिता अपनी शुरुवाती दिनों में जुलाहे का कार्य करते थे और आगे चलकर उन्होंने गिरजाघर में क्लर्क और बाद में एक स्कूल में हैड मास्टर का कार्य किया। कैरी को बचपन से इतिहास, प्रकृति विज्ञान, विशेष तौर से वनस्पति विज्ञान का ज्ञान प्राप्त करने की गहरी ललक थी। भाषा ज्ञान का बरदान तो प्रभु ने उन्हें बयाने मे दी थी, कि जूते सिलते सिलते ही उन्होंने लैटिन भाषा में महारथ हासिल कर लिया।

कैरी की एक सबसे बड़ी खूबी यह थी कि वह न तो अपने सृष्टिकर्ता ईश्वर को और न ही अपनी गरीब पृष्ठभूमि (इतिहास) को कभी भूले। वह बड़ी विनम्रता से अपनी मोची होने की पृष्ठभूमि को स्वीकार करते थे। जॉन ब्राउन मायर ने उनकी जीवन–कथा का शीर्षक–"विलियम कैरी एक मोची, जो आधुनिक मिशन के जनक बने"[1] दिया है।

कैरी के भारत आगमन के समय मुगल सत्ता लगभग समाप्त हो चुकी थी और ब्रिटिश राज अपनी जड़ें जमाती जा रही थी, यद्यपि क्षेत्रीय राजा–रजवाड़े अपने क्षेत्र में विद्यमान थे। दूसरी तरफ

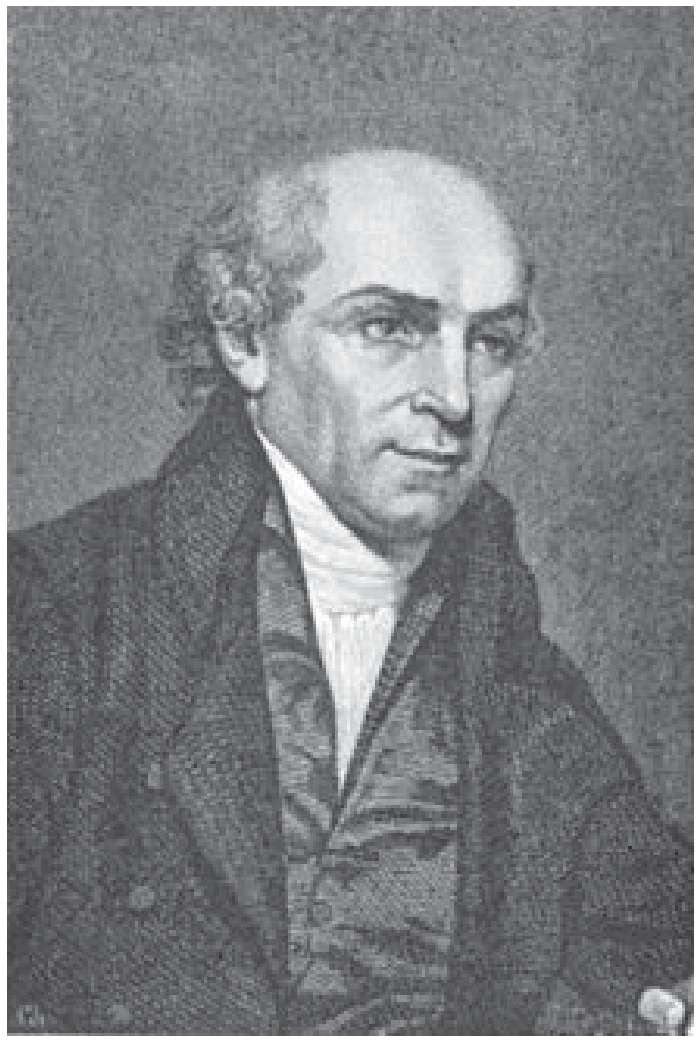

भारतीय समाज में नाना प्रकार के सामाजिक, भौतिक, आर्थिक, बौद्धिक, आध्यात्मिक व पारम्परिक समस्याओं का घनघोर अंधेरा देश में छाया हुआ था। स्त्री, शूद्रों, अछूतों की हालत तो पशुवों से भी बदतर थी। ऐसी परिस्थिति में कैरी ने परमेश्वर के राज्य के समग्र संदेश का प्रचार करते हुए मानव मुक्ति के लिये मुकम्मल कदम उठाया। प्रभु के राज्य के सुसमाचार का समग्र संदेश मन, वचन, कर्म द्वारा मूर्त रुप देकर हमारे लिए एक नमूना दिया। आइये उनके द्वारा मानव मुक्ति हेतु उठाये गये समग्र कदमों पर सक्षिप्त में विचार करें।

1 जॉन ब्राउन मायरस, *विलियम कैरी दि सुमेकर हू बीकेम दि फॉदर ऑफ मॉर्डन मिशन* (न्यू योर्कः पब्लिशर्सि ऑफ एभन्जलिकल लिटरेचर) 1887. https://www.rarebooksocietyofindia.org/book_archive/196174216674_10151489705901675.pdf (accessed on 1st Feb 2019)

ऐसी परिस्थिति में कैरी ने परमेश्वर के राज्य के समग्र संदेश का प्रचार करते हुए मानव मुक्ति के लिये मुकम्मल कदम उठाया। प्रभु के राज्य के सुसमाचार का समग्र संदेश मन, वचन, कर्म द्वारा मूर्त रुप देकर हमारे लिए एक नमूना दिया।

1.मीडिया मुक्ति का एक साधन

कैरी भारत में प्रिंट तकनीक के अग्रदूत हैं।[2] उन्होंने 31 मई 1818 में ''समाचार दर्पण''[3] नामक प्रथम अखबार शुरु किया जो किसी भी एशियाई–अफ्रीकी भाषा में प्रकाशित होने वाला प्रथम अखबार था।[4] कई भारतीयों ने इसका तहे दिल से स्वागत किया, श्री द्वारकानाथ टैगोर इसके पहले ग्राहक बने। इस समाचार पत्र ने बंगाली भाषा और साहित्य तथा नैतिक व राजनैतिक शिक्षा में बड़ा योगदान दिया।[5] ठीक इसी दौरान कैरी ने ''फ्रेन्ड ऑफ इंडिया'' नामक अंग्रेजी पत्रिका निकाला जिसने उन्नीसवीं शताव्दी के पूर्वार्द्ध में भारत में सामाजिक सुधार आन्दोलन को बड़ा बल प्रदान किया"।[6]

2. नारी मुक्ति, पारंपारिक भ्रष्टाचार तथा ब्राहमणवादी शोषण के विरुद्ध कैरी का संघर्षः

कैरी ने पारंपारिक भ्रष्टाचार व ब्राहमणवादी शोषण तथा समाज में व्याप्त भ्रष्ट आचरण के खिलाफ बड़ा संघर्ष किया। कैरी ने यह महसूस किया कि भारत में कन्या–शिशु हत्या, नदी में अपने को डुबो कर जान देने की प्रथा तथा मृतक पति के चिता पर जलकर सती होने की प्रथा से महिलाओं की मुक्ति अत्यन्त जरुरी है। एक शोध के अनुसार 1803 में, कलकत्ता के ईद–गिर्द के क्षेत्रों में छः माह के भीतर 275 विधवाओं को जला कर मारने की घटना घटी। महिलाओं के व्यापक उत्पीड़न व निर्मम हत्याओं के खिलाफ मुहिम में उन्होंने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। कैरी ने लड़कियों के लिये स्कूल खोले और जब विधवाएं मसीही बन गयीं तो उन्होंने उनके विवाह की व्यवस्था की। कैरी सती प्रथा के खिलाफ 25 वर्षों तक अनवरत लड़ते रहे और आखिर में इस अमानवीय धार्मिक कुप्रथा पर 1830 में गर्वनर जनरल विलियम वेंटिक ने कानून पारित कर वैधानिक प्रतिबंध लगा दिया।[7]

3. भाषा अनुवाद

कैरी सन 1800 में सेरामपुर में डेनिश ध्वज की छत्रछाया में रहते हुए अपने तीन मित्रो के साथ बाइबल का 40 से अधिक भाषाओ में अनुवाद करने के साथ–साथ रामायण का भी अनुवाद किया।[8] उनके सभी कार्यों का आधार बाइबल का उपदेश और अनुवाद था। इसमें उन्होंने कई प्रकार के साहित्य व पत्रकारिता के प्रकाशन को भी जोड़ा। उनके पास एक प्रिटिंग प्रेस था जिसमें भारतीय छपाई को पहली बार प्रयोग में लाया गया।

4. शिक्षा कार्य

उन्होंने शिक्षा पर बहुत जोर दिया, सभी जातियों के लड़कों और लड़कियों के लिए उनके आस–पास के क्षेत्रों में दर्जनों स्कूल, आवासीय स्कूल और अनाथालय खोले और सेरामपुर में एक आधुनिक कॉलेज की स्थापना कर भारतीय मन को प्रबुद्ध करने और उसे अधंकार व अधंविश्वास से मुक्त करने का बड़ा महान कार्य किया।[9]

5. कृषि सुधार व भूमि सुधारः

भारत देश के उपजाऊ भूमि की दुरवस्था को देख कर कैरी बड़े दुखी हुए और उन्होंने कृषि का एक व्यवस्थित सर्वेक्षण किया और कृषि सुधार के लिए अभियान चलाया। कैरी ने 1820 में भारत में कृषि–बागवानी सोसाइटी की स्थापना की। कैरी की कृषि सुधार की पहली सार्वजनिक प्रयास का उल्लेख बंगाल एशियाटिक रिसर्च के दसवे खंड में मिलता है। जो आगे चलकर इंगलैण्ड की रायल एग्रीकल्चरल सोसायटी के लिए मॉडल बना जिसकी स्थापना 1838 में हुई।[10] उन्होंने लिनियन प्रणाली में भारतीय पौध प्रजातियों की गणना की और भारत में इस विषय पर पहला वैज्ञानिक ग्रन्थ प्रकाशित किया। उनका विश्वास था कि सृष्टि माया या भ्रम नहीं परन्तु मानव अध्ययन के योग्य विषय है।[11]कैरी कृषि सुधार के साथ–साथ भूमि सुधार, अच्छी फसल पैदा करने की विधि, नये और उपयोगी पौधों की पहचान, मवेशी सुधार, बंजर भूमि को उपजाऊ बनाना, बागवानी के सुधार आदि पर महत्वपूर्ण कार्य किये।[12]

2 विशाल और रुथ मंगलवादी, *दि लीगेसी ऑफ विलियम कैरीः ए मार्डल फॉर दि ट्रान्सफरमेशन ऑफ ए कल्चर* (वीटनःइलीनोय) 1999, 19.

3 समाचार दर्पण या नया दर्पण का अर्थ अन्धकार को खत्म करना ।

4 जॉर्ज स्मिथ, *दि लाइफ ऑफ विलियम कैरी दि शूमेकर एंड मिशनरी* (जॉन मर्रेःइगंलन्ड) 1915, 276.

5 स्मिथ, *दि लाइफ ऑफ विलियम कैरी ...* 277.

6 एलेन स्कॉट, "विलियम कैरी हू ट्रान्सफार्मड ए नेशन" *मिशन फ्रॉन्टियार* (http://www.missionfrontiers.org/issue/article/william-carey, September 01, 2011 (Accessed on 05-02-2019)

7 एम. के. कुरियाकोस, *हिष्ट्री ऑफ क्रिश्टियानिटी इन इंडिया* सोर्स मटेरियलसः आइ.एस.पी.*सी.के,* 2003, 115.

8 जे. एन. फरकूहर, मॉर्डन रीलिजियस मूवामेन्ट इन इण्डिया (1915) दि मैक मिलन क. न्यूयार्क पेज14-15.

9 स्कॉट, "विलियम कैरी हू ट्रान्सफार्मड ए नेशन"

10 स्मिथ, *दि लाइफ ऑफ विलियम कैरी ...* 317.

11 स्कॉट, "विलियम कैरी हू ट्रान्सफार्मड ए नेशन"

12 स्मिथ, *दि लाइफ ऑफ विलियम कैरी ...* 320.

6. आर्थिक क्षेत्र में सुधारः

कैरी भारत में बचत बैंक प्रणाली को लागू करने वाले पहले व्यक्ति थे जिससे प्रोत्साहन प्राप्त कर भारत सरकार ने देश भर में लागू किया।[13] कैरी ने सूदखोरी की व्यापक बुराई से लड़ने के लिये भारत में बचत बैंको के विचार पेश किये। उनका विश्वास था कि प्रभु न्यायी होने के नाते सूदखोरी की प्रथा से घृणा करता है जो निवेश, उद्योग, वाणिज्य और आर्थिक विकास में बाधक है।[14]

7. कुष्ठ रोगियों की सेवाः

वह भारत में कुष्ठ रोग से पीड़ित लोगों के लिये मानवीय उपचार का अभियान चलाने वाले पहले व्यक्ति थे। उनका मानना था कि प्रभु यीशु का प्रेम कुष्ठ रोगियों के लिये भी है, इस लिये उनकी देखभाल की जानी चाहिए। उन्होंने उनके लिए चिकित्सा प्रदान करने का भी प्रयास किया।

इसके पहले कुष्ठ रोग पीड़ित व्यक्तियों को इस विश्वास से जमीन में जिन्दा गाड़ दिया जाता था या जला दिया जाता था कि एक हिंसक मौत के द्वारा उस व्यक्ति को नये स्वस्थ शरीर में पुर्नजन्म प्राप्त करने का अवसर मिलेगा।[15]

8. जाति जोड़ो आन्दोलन के जनकः

4 अप्रैल 1803 में सेरामपुर में कैरी ने कृष्णा प्रसाद नामक ब्राह्मण पृष्ठभूमि के विश्वासी का विवाह शूद्र पृष्ठभूमि के कृष्णपाल की दूसरी बेटी ओनुदा के साथ सम्पन्न कर भारत में जाति जोड़ो तथा मनुवाद तोड़ो के आन्दोलन की नींव रखी। यह केवल भारतीय मसीही इतिहास में ही नहीं अपितु पूरे भारत के इतिहास में एक महान क्रान्तिकारी कदम था। यह कदम कैरी ने उस वक्त उठाया जब भारत में जातिवाद और छुआ–छूत अपने चर्मोत्कर्ष पर था। कैरी का यह कदम जाति–व्यवस्था के ऊपर एक गौरवमय विजय का बिगुल समान था जहॉ पर एक ब्राह्मण लड़के ने एक शूद्र लड़की के साथ मसीही व्यवस्था के तहत वैवाहिक संबंध में जुड़ कर ईश्वरीय प्रेम के मेल–मिलाप का महान आदर्श प्रस्तुत किया। यह समतामूलक समाज का क्या ही धन्य नजारा था कि जातिवाद की छाती पर भारत के गाँव में एक मेज पर ब्राह्मण, शूद्र, नारी और गोरा अंग्रेज (मलेच्छ) एक साथ रोटी तोड़ने और बेटी ब्याहने का जश्न मना रहे थे।[16]

सारांश

कैरी मेहनत के कप्तान थे, वह एक कुशल शिक्षक, क्षेत्रीय भाषाओं के विकासकर्ता, शास्त्रीय भाषा के विस्तारक, विधवाओं के उद्धारक, निराश्रितों के पिता, जाति जोड़ो, मनुवाद तोड़ो आन्दोलन के जनक व समाज प्रवर्तक थे। हिन्दू धर्म और हिन्दू

वे एक ऐसे समाज का निर्माण करना चाहते थे जहॉ पर अज्ञानता और झूठ का राज नहीं परन्तु सत्य का और प्रभु का राज्य स्थापित हो। कैरी भयमुक्त, भूखमुक्त, जातिमुक्त और "ईश्वरीयराज" पर आधारित एक न्याययुक्त, प्रेमयुक्त और विकासयुक्त समतामूलक समाज की स्थापना करना चाहते थे ।

समुदाय के गहन अध्ययन के पश्चात वे इस नतीजे पर पहुंचे कि लोगों की मुक्ति के लिए कई सामाजिक व धार्मिक सुधार आवश्यक थे–जैसे जाति निर्मूलन, विधवा को जिन्दा जलाने का निषेध, बालविवाह, बहुविवाह, कन्या शिशु हत्या पर प्रतिबंध और विधवाओं के पुर्नविवाह करने का अधिकार दिलाना, मानव बलि प्रथा का निषेध, पशुओं को बलिदान के नाम पर तड़पा–तड़पा कर मारने की परम्परा का खात्मा इत्यादि। उन्होंने इस बात का बहुत ध्यान रखा कि जातिप्रथा को पूरी तरह से मसीह की कलीसिया से बाहर रखा जाए।

कैरी भारत में केवल चर्च स्थापना करने या गरीबों के लिए अस्पताल खोलने के लिये नहीं आए थे परन्तु वह भारत देश को मसीह की शिष्यता में आगे बढ़ाने के एक व्यापक दर्शन और समग्रता की सेवा से प्रेरित थे। कैरी का दर्शन एक राष्ट्र को शिष्य बनाने का दर्शन था। कैरी ने भारत को एक विदेशी देश के रुप में दोहन करने की मनसा से नहीं देखा, लेकिन वे उसे सतलोक में विराजमान ईश्वर की भूमि के रुप में प्यार करने और उसकी जनता की सेवा करने के लिए आए। वे एक ऐसे समाज का निर्माण करना चाहते थे जहॉ पर अज्ञानता और झूठ का राज नहीं परन्तु सत्य का और प्रभु का राज्य स्थापित हो। कैरी भयमुक्त, भूखमुक्त, जातिमुक्त और "ईश्वरीयराज" पर आधारित एक न्याययुक्त, प्रेमयुक्त और विकासयुक्त समतामूलक समाज की स्थापना करना चाहते थे ।

उपरोक्त वर्णित सेवा के तथ्यों के आधार पर कैरी को भारत में समग्र मिशन के जनक के रुप में वर्णित करना पूर्णतः जायज है। प्रभु यीशु ही कैरी की समग्रता की सेवकाई के आदर्श थे, जिन्होंने संसार में रहते हुए अपने सेवकाई, प्रचार, प्रशिक्षण, चंगाई–चिन्ह–चमत्कार, न्याय तथा दया की सेवकाई के द्वारा समग्रता की सेवा का नमूना प्रस्तुत किया। कैरी का जीवन और समग्र मिशन का उदाहरण आज भी भारत की कलीसिया के लिये अति प्रांसगिक और अनुकरणीय है।

रेव्ह. राम सूरत, नई दिल्ली में सेवारत हैं। उनसे इस पते पर संपर्क किया जा सकता है ramsurat77@gmail.com

13 स्मिथ, *दि लाइफ ऑफ विलियम कैरी* ...324.
14 स्कॉट, "विलियम कैरी हू ट्रान्सफार्मड ए नेशन"
15 स्कॉट, "विलियम कैरी हू ट्रान्सफार्मड ए नेषन"
16 कुरियाकोस, *हिश्ट्री ऑफ क्रिश्टियानिटी* ... 76-77.

परिवर्तन मॉडल

पास्टर मुनिन्द्र पासवान

मैं मुनिन्द्र पासवान, राजाबाजार दौलतपुर, जहानाबाद का निवासी हूँ। मैं परिवर्तन कार्यक्रम के बारे में कुछ लिखूँ, उससे पहले चाहता हूँ कि अपना संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत करूं। मैं दलित पृष्ठभूमि से आता हूँ। मेरा गाँव करीब 500 घरों का एक बड़ी आबादी वाला गाँव है, जहाँ 90 प्रतिशत लोग दलित एवं महादलित हैं। इनकी स्थिति शैक्षणिक, आर्थिक एवं सामाजिक दृष्टि से बहुत ही दयनीय है। आजादी के छः दशक बीतने के बाद भी यहाँ पर लोगों का रहन–सहन, खान–पान एवं पढ़ाई–लिखाई का स्तर बिल्कुल ही निम्न था। जिसके वजह से मेरे मन में एक बहुत ही बड़ी व्याकुलता थी। जब से मैंने अपना होश सम्भाला तब से मेरे मन में हमारे समाज के लिए एक सपना पल रहा था। हमारा एवं हमारे गाँव की आवाज सुनने वाला कोई नहीं था। या यूँ कहें कि हमारे समाज में दमदार तरीके से आवाज उठाने वाला ही कोई नहीं था।

मैं अपनी मैट्रिक की पढ़ाई करने के बाद जब कॉलेज में गया तो वहाँ से समाज सेवा करने का एक नया जज्बा मेरे मन में पैदा हुआ और वहीं से जीवन में एक नया मोड़ आना शुरू हो गया। अपने गाँव के लोगों की बैठक कर एक कमिटी बनाया जिसमें छोटे बच्चों के भविष्य संवारने के उद्देश्य से एक छोटा सा स्कूल चलाने का निर्णय लिया गया। इस कार्य के लिए पूरी बस्ती के लोगों ने सहयोग किया, परंतु मेरी आर्थिक स्थिति ठीक नहीं होने के कारण मैं अपने ही घर में एक बहुत बड़े तनाव से गुजरने लगा। इस कारण मेरा संघर्ष बहुत ही जटिल हो गया। परंतु हार न मानते हुए मैंने अपना दर्शन बड़ा किया और अपने क्षेत्र के सांसद एवं विधायक से सम्पर्क बढ़ाया। सर्वप्रथम अपने विधायक मुन्द्रिका सिंह यादव के सहयोग से अपने गाँव में सामुदायिक भवन बनवाने के साथ–साथ वहाँ तक सड़क एवं चापाकल की व्यवस्था किया। इसके बाद गरीबों के पक्का मकान बनाने के लिए कई बार जहानाबाद जिला समाहरणालय के समक्ष धरना एवं उपवास कार्यक्रम भी चलाया। उसी कार्यक्रम के तहत एवं सरकार के गलत नीतियों के खिलाफ आवाज उठाते हुए करीब साढ़े तीन माह का जेल का सफर भी तय किया। लोगों का काफी सहयोग भी हमें मिला। जब नगर परिषद का चुनाव आया तो मैंने भी चुनाव लड़ने का फैसला किया पर उसमें मैं बुरी तरह से हार गया।

चित्र सौजन्य : पास्टर मुनिन्द्र पासवान

ये मेरे जीवन का बहुत ही कड़वा अनुभव था। जिससे मैं थोड़ा विचलित हुआ। इसी दरम्यान एक पास्टर से मुलाकात हुई और उसके बाद मैं प्रभु यीशु के रास्ते पर चलना प्रारंभ किया जिसमें मुझे एक अलग प्रकार की शान्ति महसूस हुई। कुछ दिन तो अच्छा चला परंतु मैं अपने कार्यों से पूरी तरह संतुष्ट नहीं था। लेकिन मुझे यह लगा कि पहले की अपेक्षा मैं कुछ तो समाज के लिए कर रहा हूँ। ऐसा लगने लगा कि मैं पूरी रीति से धार्मिक कार्यों के लिए ही बनाया गया हूँ और कलीसिया निर्माण एवं सुसमाचार प्रचार में लीन रहने लगा। परंतु जब कभी भी मैं गरीब, लाचार और दुखियों को देखता तो मेरे मन में एक आवाज आती कि हमें इनके लिए भी कुछ करना चाहिए । मैं जिस संस्था में कार्य कर रहा था वहां कई बार इसके विषय में आवाज भी उठाया

परंतु वहाँ यह कहते हुए समझाया गया कि अब आप एक पास्टर हो गए हैं और ये पास्टर का कार्य नहीं है बल्कि आपका काम प्रभु के कार्यों को करना एवं ज्यादा से ज्यादा आत्मा बचाना है। मुझे भी लगा कि यही सही है। मैं बाइबल का पठन–पाठन एवं और अन्य गतिविधियों में भाग लेने लगा और प्रभु के कार्य में आगे बढ़ने लगा।

इसी बीच मुझे एफिकोर संस्था द्वारा आयोजित संपूर्णात्मक विकास कार्यक्रम में जाने का मौका मिला। साथ ही एच.आई.वी एवं एड्स संबंधी प्रशिक्षण में हिस्सा लिया। तब जाकर समझ में आया कि हम तो बाइबल का एक ही पहलू को पढ़ रहे थे। दूसरा पहलू तो पढ़ ही नहीं रहे थे। मेरा जो पुराना स्वप्न था सो जाग्रत हुआ। उसके बाद मैंने अपनी संस्था बनाई – उत्कर्ष जन विकास सेवा सोसायटी और एफिकोर की पार्टनरशिप के साथ परिवर्तन मॉडल प्रोग्राम को मठिया मुशहरी में करने का निर्णय लिया। जिसके उपरान्त वहाँ पर श्री अच्छेलाल जी के उपस्थिति में मैंने संपूर्णात्मक विकास की दो दिन की एक कार्यशाला रखी। उपस्थिति लोगों के सहयोग से वहाँ एक ट्यूशन सेन्टर का शुरूआत किया जिसमें लोगों ने प्रतिदिन 5 रूपया देने का निर्णय लिया। इस प्रकार से मुशहर बाहुल्य बस्ती में एक ट्यूशन सेन्टर चलना शुरू हुआ।

उस समय वहाँ की स्थिति बिल्कुल ही दयनीय थी। लोग किसी तरह से प्रतिदिन के खाने का इन्तजाम करने में व्यस्त रहते, शिक्षा के प्रति लोगों में किसी प्रकार का कोई उत्साह नहीं था। परंतु परिवर्तन मॉडल और एफिकोर का धन्यवाद हो जिसने हमें फिर से समाज सेवा के प्रति अग्रसर होने में जोश और जज्बे के साथ–साथ कई विषयों पर प्रशिक्षण मुहैया कराया। जिसमें आर. टी.आई, घरेलू हिंसा की रोकथाम, संपूर्णात्मक विकास, सृष्टि की देखभाल, मानव तस्करी और बाल शोषण इत्यादि विषय शामिल थे। इस प्रशिक्षण के फलस्वरूप इस गाँव की स्थिति बदलने के लिए एक बहुत ही बड़ा शस्त्र प्राप्त हुआ और इसके इस्तेमाल से ट्यूशन सेन्टर के बाद मैंने इन तीनों टोला को मिलाकर 218 लोगों का लाल कार्ड बनवाने का कार्य किया। जिससे वंचित, गरीब एवं असहाय लोगों को सरकारी स्तर से सस्ते भाव में अनाज मुहैया कराया जाने लगा। जिससे इनमें रोजमर्रा की जिन्दगी से जुड़ी भूख से काफी हद तक छुटकारा मिल गया। इसी प्रकार इन लोगों के बच्चे स्कूल एवं आंगनबाड़ी में पढ़ने जाएँ, इसके लिए इनके माता–पिता में जागरूकता पैदा किया गया, जिससे कि लोग अपने बच्चों को शत–प्रतिशत स्कूल भेज सकें। इस कार्य में महिलाओं ने काफी बढ़–चढ़कर हिस्सा लिया। इसी क्रम में अपनी गाढ़ी कमाई को सही जगह पर लगाने एवं बच्चों के पढ़ाई के अलावा उनके शादी ब्याह के लिए बचत करने के लिए भी लोगों को जागरूक किया गया।

इसके फलस्वरूप आज यहाँ के बच्चे सिर्फ सरकारी विद्यालय एवं आंगनवाड़ी केन्द्र में ही नहीं बल्कि प्राईवेट स्कूलों में भी पढ़ने के लिए जा रहे हैं। साथ ही स्थानीय सांसद एवं विधायक तथा जिला प्रशासन के संयुक्त सहयोग से इस गाँव के लिए एक बड़े पैकेज का आवंटन कराया गया। वार्ड पोस्ट इत्यादि के सहयोग के द्वारा गंदी बस्ती योजना के तहत मठिया मुसहरी गांव वालों के लिए सरकार ने 85 लाख रूपया का एक विशेष पेकेज दिया जिसके माध्यम से उस टोला में आने वाली मुख्य सड़क एवं कई बड़े पुल तथा गली नाली का निर्माण कार्य पूरा हुआ। जिस गांव में एक आदमी आने से कतराता था आज वहाँ लोग अपने चार चक्के वाली गाड़ी के साथ सफर कर रहे हैं। इतना ही नहीं इस टोला में परिवर्तन मॉडल आने से पहले एक भी पक्का मकान नहीं था परंतु अब लोग अपनी गाढ़ी कमाई को सहेज कर अनावश्यक खर्च से बचकर बिना सरकार के सहयोग के धीरे–धीरे अपना पक्का मकान भी बना रहे हैं। प्रधानमंत्री द्वारा चलाये जा रहे शौचालय योजना के तहत कई लोगों के घरों में शौचालय निर्माण भी हुआ। कुछ लोगों ने व्यक्तिगत तौर पर भी अपने शौचालय का निर्माण किया है। मुख्यमंत्री कन्या विवाह योजना के तहत वैसे निर्धन परिवार को जिन के घर में बच्ची है उनके शादी के लिए बांड पेपर एवं खाता दिलवाया गया जिस से उसकी शादी के समय उन्हें ज्यादा कठिनाई का सामना न करना पड़े। उज्जवला योजना के तहत करीब 25 घरों में गैस चूल्हा लगा। इस प्रकार से हमें परिवर्तन मॉडल के द्वारा समाज के साथ जुड़कर कार्य करने के लिए उत्साहित किया गया।

हमें लगता है कि परमेश्वर का जो महान दर्शन है वह पूरे संसार के लिए है और इसे परिवर्तन मॉडल के माध्यम से पूरा किया जा सकता है। पर हम इतने से संतुष्ट नहीं हो सकते क्योंकि अभी और भी बहुत सारे कार्य करने बाकी हैं। क्योंकि अभी भी बहुत सारे व्यक्ति हैं जो बाइबल के एक ही पहलू को पकड़ कर चलते हैं और उन तक भी परिवर्तन मॉडल के विचारों को पहुंचाना है तथा पृथ्वी पर परमेश्वर का राज्य स्थापित करना है। हम् चाहते हैं कि आप हमारे लिए एवं उन सभी लोगों के लिए प्रार्थना करें ताकि हम निःस्वार्थ भाव से प्रभु की सेवा एवं समाज के दबे–कुचले, विधवा–अनाथों एवं असहाय लोगों के लिए अपने जीवन के अन्त तक कार्य करते रहें, क्योंकि परमेश्वर पिता की यही इच्छा है। साथ ही हमारे समाज में कई बातों के लिए आपस में फूट है जो वचन के विरूद्ध है, उनके लिए भी प्रार्थना करें कि आपसी भाईचारा बना रहे।

धन्यवाद।

मुनिन्द्र पासवान

पास्टर मुनिन्द्र पासवान, जहानाबाद कम्युनिटी चर्च, जहानाबाद, बिहार के पास्टर हैं। उन्हें इस पते पर संपर्क किया जा सकता है
u.j.v.s. society@gmail.com

सत्य, न्याय और धार्मिकता का समाज

डा॰ सोनाझरिया मिंज

तस्वीरें अभिव्यक्ति के प्रबल माध्यमों में से एक है। तस्वीरें यथार्थ की प्रतिबिम्ब हो सकती हैं और काल्पनिक भी। कुछ चित्रकार वास्तविकता को बहुत प्रखरता से कागज़ पर उतारते हैं और कई यथार्थ की वीभत्सता के परे अपनी कल्पनाओं को पेश कर अपनी कुशलता का प्रदर्शन करते हैं। वास्तविक तस्वीरें आशावादी और निराशावादी दोनों हो सकती हैं। कहा जाता है कि आशावादी कला में निराश व्यक्ति में आशा की किरण प्रज्वलित करने की सामर्थ्य होती हैं। इसी पूर्वाग्रह के साथ मैं इस लेख को लिख रही हूँ।

मेरे भारत की तस्वीर भी कुछेक काल्पनिक एवं आदर्श छविओं को मिला कर बनी हैं। इन्हें मैंने अपने आरंभिक जीवन की कुछ वास्तविक घटनाओं की तस्वीरों के समन्वय से चित्रित किया है। बचपन की खट्टी–मीठी यादों के एल्बम में कुछ ऐसी तस्वीरें हैं जिन्हें स्वीकारना कठिन होता है लेकिन ये यथार्थ के हिस्से हैं। इस लेख में मैं ऐसी चंद दुखद तस्वीरों के माध्यम से मेरे भारत की एक आदर्श तस्वीर पेश करना चाहती हूँ ।

पांच वर्ष की आयु में मुझे, कुछ हम–उम्र बच्चों से मेरे भाई–बहन के बतौर परिचय करवाया गया। मेरी नज़र में लगभग सभी बच्चों की वेश–भूषा कुछ अजीब थी। किसी के पैरों में चप्पल नहीं थे, उनके शर्ट/फ्रॉक सही साइज के नहीं थे, कपड़ों के रंग भी अजीब, सब मुझे देख कर कभी खुसुर–फुसुर तो कभी खीसें निपोर रहे थे। मेरे भी मन में प्रश्न थे, कौतुहल भी कि मेरे इन भाई–बहनों के कपड़े, भाषा, रहन–सहन मुझ से भिन्न क्यों जान पड़ते ? मेरे माता–पिता अतिथियों के साथ जिनके पहिरावे भिन्न थे उनसे बहुत ही प्रेमभाव और सहजता से मिलजुल रहे थे। मुझे "परिवार", "विस्तृत परिवार", "अन्य रिश्ते", इत्यादि समझाई गईं जिससे मैंने विभिन्नता के परे समानता और जोड़ने वाली बातों के धागों को ढूँढने का प्रयास किया। टिप्पणी – मैं शहर से अपने पैतृक गाँव गयी थी जहाँ हमारा विस्तृत परिवार रहता था।

विभिन्न अवसरों पर हमारे परिवार का नियमित रूप से अपने गाँव जाना, वहाँ रिश्तेदारों तथा गॉव–वालों के साथ मेल–जोल, त्योहार मानना, सामान्य था। परिवार बस द्वारा एक लम्बी "कठिन" यात्रा के पश्चात, पांच मील की दूरी पैदल चल कर अपने "घर" पहुँचता था। हर अवसर पर खचाखच भरी बस की यात्रा मुझे अजीब तो लगती थी साथ ही हर बार कुछ नए प्रश्न पैदा कर देती थी। उस ज़माना में न "रेड बस" थी, न "एडवांस रिजर्वेशन", न क्यू से बस में चढ़ने का सिस्टम था, न निर्धारित बस स्टॉप। बल्कि बस का किराया भी कभी–कभी आधी यात्रा के बाद या बस से उतरने के बाद देना होता था। बस का चलना भी सिर्फ और सिर्फ "ड्राइवर बाबू" की मर्ज़ी पर होता था। न लोगों के पास घड़ियाँ थीं, न किसी को कुछ काम छूट जाने की चिंता। चिंता का एकमात्र विषय हुआ करता था कि "हम बस पकड़ सकें और अपने गंतव्य स्थल पहुँचें ।" अतः यात्रा का अर्थ, एक एजेंडा – "सूर्यास्त से पहिले अपने गंतव्य स्थान पहुँचो।" बहुधा प्रत्येक रूट पर एक ही बस हुआ करती थी क्योंकि हर दिन के यात्रियों की संख्या में अप्रत्याशित उतार–चढ़ाव होता था। ड्राइवर को तो मानो बस चलाने का जोश तभी होता, जब बस पूरी भर जाती, वरन इतना भर जाती कि लोगों को बस की छत पर चढ़ना पड़ जाता। मालिक को अधिक से अधिक कमाई सौंपना ड्राइवर–खलासी–कंडक्टर का कर्तव्य था। भरी बस की कुछ भयावह तस्वीरें आज भी मेरे मानस–पटल पर अंकित हैं । ये चित्र हृदय–विदारक क्यों हैं?

ड्राइवर बाबू के साथ एक "कंडक्टर महाराज" भी होता था। स्वामिभक्त कंडक्टर, की कर्तव्यनिष्ठा का प्रमाण ड्राइवर की जरूरतों (पानी, पान, बीड़ी, इत्यादि) को पूरी करने के अलावे बस में लोगों को ठूँस – ठूँस कर भरने में दिखाई देता। लोगों से बस का किराया लेने की प्रक्रिया शायद कंडक्टर के प्रबल पद का द्योतक होता था, क्योंकि कंडक्टर किसी को भी बस में चढ़ने से मना कर सकता था या किसी को बस से उतार भी सकता था। उसकी मर्जी पर ही प्रत्येक यात्री का अपने गंतव्य–स्थान तक पहुंचना निर्भर था। तभी तो वह सभी से एक बराबर किराया लेता था चाहे यात्री सीट पर बैठे या खड़े रहें, एक दूसरे के ऊपर गिरते रहें या दूसरे के पैर पर खड़े रहें, बस की छत पर बैठें या बस के पीछे सीढ़ी से लटक लें, किराया तो बराबर ही देना होता था – वाह रे विषमता में समानता का व्यवसाय !

घर पर मैंने सामाजिक परिस्थितियों से सम्बंधित अनेक चर्चायें सुनी थी। समाज में असमानता, विषमता पर आधारित भेदभाव, अपने से विषम (संभवतः नीचे/कम हैसियत वाले) का हक़ छीनना, औरों की जमीन का अतिक्रमण, समाज के "कुछ" लोगों द्वारा "दूसरों" के अधिकार व मर्यादा का हनन, उन विषयों में से कुछेक ही हैं। इन चर्चाओं में एक बात बार–बार उभर कर आती थी–"हम आदिवासी हैं "; "गैर–आदिवासी, आदिवासियों का दमन करते तथा उन्हें उनके अधिकार से वंचित कर आदिवासी क्षेत्र में अन्याय करते थकते नहीं"; "लोगों और प्राकृतिक संसाधनों दोनों का सवर्ण और सरकार शोषण करते ही जाते हैं"; "भारतीय संविधान में निहित प्रत्येक नागरिक की समानता और सम्मान के विपरीत लगातार और सिलसिलेवार शोषण"; इत्यादि। क्या संविधान के विरुद्ध कार्य राष्ट्र–अपराध नहीं? आदिवासियों पर किए जाने वाले शोषण की तस्वीरें उतनी ही जघन्य थीं जितनी वंचित करने के अकृत्य–शोषण का चित्रण। विज्ञान और गणित में रूचि रखने वाली मुझ बालिका को, "समाज के प्रति उत्तरदायित्व"

नामक विषय से परिचय, मेरे माता–पिता की आपसी चर्चाओं और अन्य विचारकों के वाद–विवाद को सुनने के द्वारा हुआ। सामाजिक अपराधों को सहन न करना एवं उनके प्रति प्रबल और प्रभावशाली प्रतिक्रिया व्यक्त करने की आवश्यकता मेरे लालन–पालन का हिस्सा था।

अपने पैतृक गाँव की बस यात्रा में कंडक्टर द्वारा "लोगों" के साथ "जानवर–सा" व्यवहार मेरी सहज समझ से परे था। इन दृश्यों का कठोर प्रहार मेरे कोमल मानस पटल पर अक्सर होता था। कंडक्टर किसी सवर्ण यात्री के प्रति आभारवश किसी आदिवासी बूढ़ी महिला तक को नहीं बख्शता, आदिवासी बूढ़ी को एक स्वस्थ सवर्ण महिला के लिए जबरदस्ती सीट से उठा देता था। जब मैं लगभग तेरह – चौदह वर्ष की थी तब मैंने ध्यान दिया की कंडक्टर लड़कियों को धक्के देने, उन पर अपने बल का उपयोग करने में विशेष दिलचस्पी लेता था। लगभग सोलह वर्ष की आयु की एक घटना ने तो मुझे झंकझोड़ कर रख दिया। हमेशा की तरह जब हम अपने गाँव के निकटतम (8 किलोमीटर दूर) बस स्टेंड से बस पर चढ़े तो बैठने का स्थान बिलकुल नहीं था, क्योंकि बस आगे से ही भर कर आयी थी। मेरे परिवार, माता–पिता और बहनें में से कुछ, बैठने की जगह की कमी के कारण बस में औरों की तरह खड़े थे। बाद के किसी बस पड़ाव में जब कुछ लड़कियाँ चढ़ीं तो कंडक्टर ने अपना रंग दिखाना शुरू किया। वह लड़कियों को दबा–दबा कर धकेलने लगा। न तो उन लड़कियों ने और न ही किसी अन्य ने आपत्ति दर्ज की। मेरे अंदर, अपराध को न सहन करने वाली बागी–लड़की[1] जाग उठी। मैंने कंडक्टर के व्यवहार पर आपत्ति जताई। शायद कंडक्टर को पहली बार किसी की आपत्ति का सामना करना पड़ा, यह उसे बहुत अजीब लगा। उसे आश्चर्य इस बात का था कि मेरे प्रति आपत्तिजनक व्यवहार न होने के बावजूद मैंने क्यों विरोध किया। बहस तो हुई लेकिन मैंने उसे अपने ऊपर हावी न होने दिया। लेकिन आश्चर्यचकित होने की बारी अब मेरी थी। मेरे तथा मेरी एक छोटी बहन के अलावे पूरी बस में किसी ने भी उस कंडक्टर को आड़े हाथ नहीं लिया।

यह क्या था? आदिवासियों की सरलता? शांतिप्रियता? हीन भावना? सवर्णों के प्रभुत्व का बोझ? सवर्णों के अतिशोषण का परिणाम? या निष्क्रियता? उस बस यात्रा की घटना, आदिवासियों के शोषण के विराट तस्वीर की एक सूक्ष्म झाँकी मात्र थी जिसने मेरे अंदर सवर्णों के प्रति घृणा एवं रोष को जन्म दिया। किसी अपराध को रोकने या गलत का सामना कर पाने के लिए शारीरिक, मानसिक या राजनितिक प्रबलता की आवश्यकता होती है। इस बात का सबक मुझे बहुत पहले प्राप्त हो गया था। राँची, टाटानगर, राउरकेला में विकास के मंदिरों के द्वारा मध्य भारत के आदिवासी इलाकों में रहनेवाले आदिवासियों के बीच गरीबी की वृद्धि, परन्तु गैर–आदिवासियों की समृद्धि के पीछे क्या कोई रहस्य था? कोई षड्यंत्र था? या यह एक प्राकृतिक प्रक्रिया का परिणाम था?

विकास के पाश्चात्य ढाँचे के अनुसार आदिवासी और सुदूर आदिवासी गाँव पिछड़ेपन के गर्त में धकेले जा रहे थे, जबकि उन इलाक़ों में आए और स्थानांतरगमित गैर–आदिवासियों के

यह क्या था? आदिवासियों की सरलता? शांतिप्रियता? हीन भावना? सवर्णों के प्रभुत्व का बोझ? सवर्णों के अतिशोषण का परिणाम? या निष्क्रियता? उस बस यात्रा की घटना, आदिवासियों के शोषण के विराट तस्वीर की एक सूक्ष्म झाँकी मात्र थी जिसने मेरे अंदर सवर्णों के प्रति घृणा एवं रोष को जन्म दिया।

धन–संचय एवं जीवन के स्तर में नियमित वृद्धि की कोई सीमा नहीं दिखाई देती । ये सब एक जटिल और पेचीदे मसले थे। भारत की आजादी के एकहत्तर वर्ष के बाद, झारखण्ड एवं छत्तीसगढ़ के अलग प्रान्त बनने के अट्ठारह वर्ष बाद भी आदिवासी, गैर–आदिवासी के बीच आर्थिक विषमता, गैर–आदिवासी द्वारा आदिवासी का शोषण, सामाजिक–अन्याय के नित नए रूप, आदिवासी नागरिक की मर्यादा और गौरव का हर संभव यथाक्रम हनन, मात्र स्वार्थ पर ही केन्द्रित नहीं, परन्तु यह विषमताओं की उन जड़ों से जुड़ा है जो शोषण द्वारा दूसरों के अधिकार और अस्मिता के पूर्ण हनन में अपने जीवन की सार्थकता महसूस करते हैं। मैंने पढ़ा था कि भारत विविधताओं का देश है परन्तु गैर के अधिकारों के हनन की मानसिकता, भारत को– "भारत विषमताओं का देश है" नामक शीर्षक से विभूषित करता है।

अब प्रश्न है कि मेरे भारत की तस्वीर है क्या? पारिवारिक पालन–पोषण के तहत मेरा परिचय एक और पहलू से हुआ जो वीभत्सता के परे सुन्दरता, दमन के परे स्वछंदता, कुचलेपन के परे भरपूरी की झलक की संभावना की निश्चयता का आधारबोध है। प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना करने का साहस, मुख्यधारा से अन्यत्र सोच, विक्षुब्ध दृश्य के विपरीत की माँग, अल्पसंख्यक आवाज होने के बावजूद अडिगता का प्रदर्शन करने का रवैया किसी में तभी दिखाई देता जब उस व्यक्ति को सत्य की जानकारी हो, प्रतिकूल परिस्थितियों के अस्थायित्व का विश्वास हो और असंभव को संभव में बदल सकने की सामर्थ से निश्चित परिचय हो। बाइबल की झलकियाँ और यीशु के अनुयायियों के पूर्व तथा समकालीन उदाहरणों के कारण धीरे धीरे मुझ में भारत की तात्कालिक विषमताओं, शोषणों और अत्यंत हृदय–विदारक तस्वीर के बिलकुल विपरीत एक ऐसी तस्वीर की कल्पना करने का साहस हुआ जो सृष्टिकर्ता परमेश्वर की सृष्टि की तस्वीर के अनुरूप है। सत्य, न्याय और धार्मिकता का सम्पूर्ण परिचय जीवित परमेश्वर में प्राप्त होता है। जहाँ सत्य, न्याय और धार्मिकता उसके एक पहलू हैं वहीं प्रेम, अनुग्रह और शांति उसके दूसरे पहलू। वह मेरे भूखंड के विकराल चित्र को इस प्रकार छोड़ नहीं सकता। अतः जबतक उसके अनुयायी भारत के तात्कालिक तस्वीर को उस तस्वीर की समानता में लाने के लिए प्रयासरत हैं, मुझे विश्वास है कि मेरे भारत की काल्पनिक तस्वीर यथार्थ में परिणत हो सकती है, जिसमें समता, सामाजिक–आर्थिक–राजनैतिक न्याय, सम्मान और बंधुता निम्न रूप में चित्रित हैं –

बाइबल की झलकियाँ और यीशु के अनुयायियों के पूर्व तथा समकालीन उदाहरणों के कारण धीरे धीरे मुझ में भारत की तात्कालिक विषमताओं, शोषणों और अत्यंत हृदय–विदारक तस्वीर के बिलकुल विपरीत एक ऐसी तस्वीर की कल्पना करने का साहस हुआ जो सृष्टिकर्ता परमेश्वर की सृष्टि की तस्वीर के अनुरूप है। सत्य, न्याय और धार्मिकता का सम्पूर्ण परिचय जीवित परमेश्वर में प्राप्त होता है। जहाँ सत्य, न्याय और धार्मिकता उसके एक पहलू हैं वहीं प्रेम, अनुग्रह और शांति उसके दूसरे पहलू।

यह चित्र[2] मेरे उस भारत की है,

जहाँ की हवा, पानी, मिट्टी में एक अजब सी स्फूर्ति और नयापन है ;

न किसी की कुछ आवश्यकता है और न कोई किसी से गुहार कर मांग रहा है;

स्वस्थ माताएँ स्वस्थ बच्चों को जन्म देतीं, उनके जननांग नहीं, सभी उनके मुखड़े को निहारते थकते नहीं ;

दादा और पोतियाँ खेतों की मेंड़ों में दौड़ते नज़र आते, जबकि नाती अपनी नानियों से पेड़ों पर चढ़ने व जंगल से फल–फूल तोड़ लाने की प्रतियोगिता करते ;

लोग रोज़गार के लिए भटकते हुए अन्य शहरों–देशों में किराये के छोटे – छोटे मकानों में सिकुड़ कर नहीं, अपने–अपने मकानों में, अपनी कमाई का हिस्सा से तृप्ति का जीवन जीते;

अपने स्वार्थ व लालच के लिए जमीन के नीचे से अनावश्यक खनिज नहीं निकालते जाते, और न दूसरों के खेतों –खलिहानों पर अतिक्रमण कर ऊँची – ऊँची इमारतें बनाते;

अपनी आवश्यकता की पूर्ति के पश्चात लोग उनको ढूंढ़ते जिन्हें कुछ ज़रूरत हो ;

गाँवों में चौपालों, तथा शहरों में पार्क व कम्युनिटी सेंटर में छोटे बच्चों की किलकारियाँ, व वृद्ध–वृद्धाओं के ठहाके की गूंज, मनोरंजन और खुशहाली के पैमाने होते;

दलित महिला के शारीरिक–शोषण की दारुण गाथाएँ, पाषाण युग का इतिहास मात्र बन कर रह जातीं किताबों में बंद;

अंतर्राष्ट्रीय जीतों के सिलसिले के पश्चात् भी, आदिवासी खिलाड़ियों/महिला कप्तानों के हिस्से में राष्ट्रीय पुरस्कार स्वप्न मात्र न रह जाते;

महुआ या मधु के छत्ते वाले पेड़ को हाथी भाई भालू के लिए छोड़ देता,

और भूले–भटके बाघ यदि बैलों के साथ शाम को घर घुस जाता तो बच्चियाँ उसका नामकरण कर भैसों के साथ–साथ भूसा डाल देती;

मिट्टी खा कर तृप्त साँप चुहिया बिटिया से जंगल की वनस्पति व कीड़ों की आबादी की खबरें लेता;

न नदियाँ अपनी बहाव बदलती, न पहाड़ गिरते–पड़ते किसी को हानि पहुँचाते;

लोग "खुद–जीयो औरों को भी जीने दो" का गाना नहीं वरन "औरों को भी जीनो दो और खुद जियो" का उदाहरण देते;

बसों में "पहले आप–पहले आप" के शिष्टाचार से सीट की कभी कमी न होती;

यदि कहीं से आवाज आती तो वह सिर्फ खुशी के गाने, दूसरे को मुबारकबाद की पुकार या सृष्टिकर्ता की अनोखी सृष्टि से चकित प्रशंसा के नारे ही होते;

सृष्टिकर्ता की अनोखी सृष्टि से आशीषित लोगों के प्रशंसा के नारे ही होंगे।

परमेश्वर (सत्य, न्याय और धार्मिकता) के उपासक व अनुयायियों के लिए एक ही विकल्प है असत्य, अन्याय और अधर्म की राहों का अडिगता से विरोध करना, उनके विपरीत दिशा में समाज को मोड़ने का हर संभव प्रयास करना तथा उन सभी कार्यों में योगदान देना जो असत्य, अन्याय और अधर्म को निष्क्रिय एवं निर्मूल कर सकते हैं।

सम्पूर्ण प्राणिजगत में, मुक्त–इच्छा से विभूषित, मनुष्य ही एक ऐसी सृष्टि है जिसे सत्य को नकार असत्य को चुनने की, न्याय को छोड़ अन्याय करने की, धार्मिकता को छोड़ हर संभव अधर्म करने के चुनाव की स्वतंत्रता है। परमेश्वर (सत्य, न्याय और धार्मिकता) के उपासक व अनुयायियों के लिए एक ही विकल्प है असत्य, अन्याय और अधर्म की राहों का अडिगता से विरोध करना, उनके विपरीत दिशा में समाज को मोड़ने का हर संभव प्रयास करना तथा उन सभी कार्यों में योगदान देना जो असत्य, अन्याय और अधर्म को निष्क्रिय एवं निर्मूल कर सकते हैं।

नोट

1. मुझे बचपन से अपने बहादुर पुरखों और विशेषकर "सिंगी दई" की कहानियों से प्रेरणा प्राप्त होती थी। माना जाता है कि जब उराँव रोहतास गढ़ में वास करते थे और मुग़ल लोगों ने एक त्योहार के दिन जब सारे उराँव मर्द "हँड़िया" के नशे में चूर थे, किले पर चढ़ाई किया। परन्तु राजकुमारी उराँव सिंगी दई के नेतृत्व में महिलाओं की सेना से उन्हें तीन बार हार प्राप्त हुई।

2. यशायाह 65:17–25 पर आधारित।

झारखण्ड के उराँव जनजाति में जन्मी डा॰ सोनाझरिया मिंज 28 वर्षों से कंप्यूटर साइंस पढ़ातीं एवं वर्तमान में जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में प्रोफेसर हैं। अपने संव्यवसाय, समाज, कलीसिया और परिवार के प्रति उत्तरदायित्वों को मसीही मूल्यों के आधार पर निभाने में प्रयासरत रहती हैं।

उनसे इस पते पर संपर्क किया जा सकता है sona.minz@gmail.com

परिवर्तन मसीह से मिलाप

लेखक: रेव्ह डॉ. रिचर्ड हॉवेल

प्रकाशकः इवान्जेलिकल फेलोशिप आफ इन्डिया, नई दिल्ली, 2006

समीक्षक – सुश्री वेरोनिका मैसी

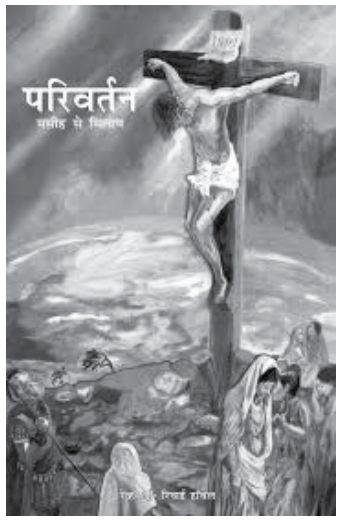

रेव्ह डॉ. रिचर्ड हॉवेल की पुस्तक 'परिवर्तन मसीह से मिलाप ' में परिवर्तन के विषय बहुत ही स्पष्ट रूप से व्याख्यान करते हैं कि परिवर्तन एक ऐसी लगातार होने वाली प्रक्रिया है जो महिमा के एक स्तर से दूसरे स्तर तक उद्देश्य को प्राप्त करते हुए पहुंचती है। परिवर्तन का अर्थ बदलना नहीं है परन्तु वह बनाना है जो है ही नहीं – उदाहरण के रूप में तितली कोई बहुत भिन्न या उच्च विकसित कीड़ा नहीं है परन्तु तितली का परिवर्तन बहुत ही अद्‌भुत नयी उत्पत्ति है। इसी प्रकार मसीही शिष्य शायद संसार में सर्वोत्तम जानकारी प्राप्त करने वाला व्यक्ति न हो परन्तु मसीह में वो नयी सृष्टि है जो अनेक जीवनों को प्रेरित करने की सामर्थ्य रखता है। अतः यह परिवर्तन आंतरिक परिवर्तन है, जो आंतरिक प्रक्रिया और बाहरी अवस्था से उत्पन्न होता है, और केवल परमेश्वर ही परिवर्तन का स्रोत और सामर्थ्य है।

परिवर्तन की प्राथमिकता एक सीमित दृष्टिकोण से निकलकर परमेश्वर द्वारा स्थापित बड़ी तस्वीर को देखना है, यह बड़ी तस्वीर और कुछ नहीं परन्तु एक मनुष्य की आत्म–केंद्रित सोच से निकलकर परमेश्वर के दृष्टिकोण से संसार को देखना और उसके उद्देश्यों को जानना है। दिन प्रति–दिन जब हम उसके उद्देश्यों को जानने का प्रयास करते हैं तो बहुत से संघर्ष का सामना भी होता है, परन्तु उस मे परमेश्वर का अद्‌भुत अनुग्रह सामर्थ प्रदान करता है। एक मनुष्य का जीवन मसीह में आने से पहले चाहे जैसा भी हो परन्तु परमेश्वर का अनुग्रह उसे नयी सृष्टि का रूप देता है। बाइबल (लूका १९:१–१०) में यदि जक्कई के जीवन को देखा जाए तो वह आत्म–केंद्रित, धन से अत्यधिक प्रेम रखने वाला तथा समाज में बहुत ही गिरा हुआ व्यक्ति था, परन्तु उसकी एक इच्छा ने उसे यीशु से व्यक्तिगत रूप से मिलवाया और वो थी–यीशु को देखने की इच्छा। यीशु से उसका मिलाप उसके जीवन के परिवर्तन का कारण बन गया। जक्कई का परिवर्तन न केवल उसके, उसके परिवार के, परन्तु उसके कार्यस्थल में भी परिवर्तन लेकर आया और इस प्रकार वह कई जीवनों के लिए आशीष का कारण बना।

एक मसीही जीवन ही एक मसीही परिवार का आरम्भ करता है, और एक मसीही परिवार अनेक लोगो को परिवर्तित कर सकता है, इसका उदाहरण श्रीमती डेज़ी और श्रीमान डेविड हैं, जिन के परिवर्तित जीवन ने बहुतायत से अनेकों लोगों के जीवन को परिवर्तित किया और आज भी ये कार्य उनके बेटे रेव्ह डॉ रिचर्ड हॉवेल के द्वारा जारी है। परमेश्वर द्वारा यह आशीषित परिवार परमेश्वर की महिमा को प्रदर्शित करता है। और यह महिमा अनेक जीवनों द्वारा दिखाई देती है। मिशनरी ग्रैहम स्टैंस तथा उनके प्रभावशाली जीवन को कैसे भूल सकते हैं? ग्रैहम स्टेंस का परिवार बहुत बड़ी मिसाल है, उनका बड़ा त्याग और लोगो के प्रति दया भाव आज भी अनेक जीवनों को परिवर्तित करने का कारण है। लेखक द्वारा बहुत से मिशनरियों के जीवनी को प्रस्तुत किया गया है।

परमेश्वर ने जिन लोगों को चुना और बुलाया है उनके अन्य लोगो के साथ सम्बन्ध में मसीह समुदाय का भिन्न चरित्र व स्वाभाव दिखाई देता है। एक कलीसिया, परमेश्वर के लोगों का समूह है, यह मसीह की देह और पवित्र आत्मा का मंदिर है। एक जागरूक कलीसिया संपूर्ण रीति से एक परिवार है जो विश्वास का परिवार है।

पुस्तक में प्रभु यीशु मसीह को स्वयं एक मिशनरी के रूप में प्रस्तुत किया गया है जहाँ यीशु मसीह का आगमन पूरे संसार के परिवर्तन और उद्धार का कारण बन गया। परन्तु यीशु मसीह का दूसरा आगमन जल्द ही हमारे बीच में होनेवाला है। जहाँ वो परिवर्तित कलीसिया को एक पवित्र दुल्हन के रूप में देखता है। इस कलीसिया का हिस्सा प्रत्येक वो व्यक्ति है जिसके जीवन को परमेश्वर ने चुना है। पुस्तक में लेखक ने धार्मिक स्वतंत्रता तथा मनुष्य की मौलिक स्वतंत्रता के विषय में भी ज़िक्र किया है । मानव का प्रथम अधिकार या मौलिक अधिकार धार्मिक स्वतंत्रता है। धार्मिक स्वतंत्रता विकास का विचार है और हमारे मूलभूत अधिकारों तथा धार्मिक स्वतंत्रता के प्रयोग के द्वारा हम बहुतायत से परिवर्तन ला सकते हैं।

परमेश्वर का दर्शन, परमेश्वर का सत्य, परमेश्वर की इच्छा लोगों की अपनी रूचि या अभिलाषा के अनुसार राजनैतिक रूप में बदले नहीं जा सकते हैं। परन्तु यह केवल उन लोगो में कार्य करता है, जो प्रार्थना के द्वारा आत्मा के उस कार्य को सुनना व अनुभव करना चाहते हैं। जो वह, परमेश्वर के वचन के द्वारा करता है। यह पुस्तक पाठकों को अपने जीवन शैली में परिवर्तन के विषय में विचार करने के लिए प्रेरित करती है, परिवर्तित जीवन को उत्साहित करती है तथा एक सीमित सोच के दायरे से निकल कर परमेश्वर के चुने हुओं को आगे बढ़ने का हौसला देती है।

सुश्री वेरोनिका मैसी, एफिकोर के नई दिल्ली स्थित एक प्रोजेक्ट में कार्यरत हैं। उनसे इस पते पर संपर्क किया जा सकता है *veronica.eficor@gmail.com*

समुदाय की सेवा करना, ईश्वर की सेवा करना है

पास्टर नथानिएल मरांडी

दि बेथेल पेंतेकोस्तल चर्च डंडखोरा की स्थापना नोर्वे की मिशनरी बहन एम्मा केलेन्ड के द्वारा हुई । उनके अपने देश नॉर्वे वापस चले जाने के बाद मिशनरी बहन मिस आर. हॉस्टवेट और मिस जी. एकॉर्नरुड जो नॉर्वे से ही थीं ने चर्च को, चर्च के काम को बढ़ाने की जिम्मेवारी ली । लोगों की सेवा में मिशनरी बहनें जो पेशे से नर्स थीं इस भारत देश के लिए बड़ा त्याग किया। जीवन का अधिकांश समय उन्होंने भारत के इस पिछड़े राज्य बिहार के कटिहार जिले में बिताया । वे अविवाहित रहकर यहाँ के लोगों की आर्थिक, शारीरिक एवं मानसिक उन्नत्ति एवं सुधार के काम में प्रयत्नशील रहे ।

सन 1989 से माननीय बेंजामिन मुर्मू जो चर्च में पादरी और संस्था के मुख्य संचालक थे तथा श्री नथानिएल मरांडी जो पादरी और संस्था के व्यवस्थापक थे, ने मिलकर चर्च के कार्यभार को कन्धा दिया जिसको मिशनरियों ने प्रारंभ किया था । सन 3 दिसम्बर 1997 में माननीय पादरी बेन्जामिन मुर्मू के मृत्युपरांत उनके सुपुत्र श्री गयुस मुर्मू ने उनके कार्यभार को संभाला ।

मुख्य रूप से इस क्षेत्र की मूल आवश्यकताओं, जैसे, भोजन, औषधि एवं शिक्षा में ध्यान देकर चर्च ने लोगों के विकास का काम किया । मिस एम्मा केलेन्ड जो अग्रणी मिशनरी थी ने लोगों के अच्छे स्वास्थ्य के लिए औषधि उपलब्ध करा कर सेवा की । उनके पास छोटा डिस्पेंसरी था जहाँ लोग मदद पाने के लिये आया करते थे । वे आस–पास के गावों में जाकर लोगों से मिलते, दवाई के द्वारा मदद करते और ईश्वर का वचन बताते थे । उनकी सेवा एवं जीवन से प्रभावित होकर बहुत से लोगों ने यीशु मसीह पर विश्वास किया ।

उन दिनों में अधिकांश लड़कियों को स्कूल नहीं भेजा जाता था। उन्हें दी जाने वाली चिकित्सा से भी उनको संकोच होता था। इन सब चुनौतियों के बावजूद चर्च ने अच्छे काम को जारी रखा। चर्च अपने दर्शन के प्रति स्पष्ट था कि समुदाय में लोगों को साक्षर और जिम्मेदार बनाने के लिए प्रेरित और उत्थान करना है ताकि वे देश के प्रति वफादार एवं ईश्वर भक्ति का जीवन जी सकें । चर्च ने छोटे बच्चों के लिए स्कूल की शुरुआत की जो 1965 से 1976 तक ही चल पाया । बाद में चर्च ने फिर से स्कूल की स्थापना करना शुरू किया जो अभी तक सुचारू पूर्वक

“मिस एम्मा केलेन्ड जो अग्रणी मिशनरी थी ने लोगों के अच्छे स्वास्थ्य के लिए औषधि उपलब्ध करा कर सेवा की । उनके पास छोटा डिस्पेंसरी था जहाँ लोग मदद पाने के लिये आया करते थे । वे आस–पास के गावों में जाकर लोगों से मिलते, दवाई के द्वारा मदद करते और ईश्वर का वचन बताते थे । उनकी सेवा एवं जीवन से प्रभावित होकर बहुत से लोगों ने यीशु मसीह पर विश्वास किया ।”

चल रहा है जहाँ समुदाय के बहुत से गरीब बच्चे निःशुल्क में शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं । उनमें से कुछ बच्चे उच्च– स्तरीय पढ़ाई (इंजीनियरिंग,नर्सिंग) इत्यादि के लिए आगे बढ़ सके। निश्चित रूप से वे बच्चे आने वाले दिनों में समाज के उत्थान में बड़ा योगदान करेंगे ।

अत्यंत गरीबी एवं अशिक्षा के कारण लोगों के पास शौचालय नही था। उन्हें इसकी आवश्यकता महसूस नहीं होती थी, जिसके कारण उनका स्वास्थ्य काफी दयनीय था। चर्च ने इस दिशा में काम किया तथा लोगों को जागरूक किया। भारत सरकार के स्वच्छ भारत अभियान के तहत गांवों में 300 से अधिक शौचालय का निर्माण किया गया, जो लोगों के अच्छे स्वास्थ्य एवं स्वाभिमान को बढ़ावा दिया। चर्च ने गाँव के लोगों को वृद्धा–पेंशन, आधार कार्ड, बैंक खाता खोलने, साफ पानी की व्यवस्था करने, रोड को मरम्मत करवाने इत्यादि काम में मदद किया।

चर्च ने मसीही विश्वास को कार्य रूप में प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया जिससे समुदाय में बड़ा बदलाव आया। इस प्रकार दि बेथेल पेंटेकोस्टल चर्च डंडखोरा वर्तमान में भी समुदाय में लोगों को जिम्मेवार नागरिक होने के लिए जागरुक करने, ईश्वर और देश के प्रति वफादार बनने के लिए उत्साहित करने के लिए लगातार प्रयत्नशील है। इस क्षेत्र में यह चर्च काम का एक अच्छा उदाहरण है।

एफिकोर के माध्यम से परिवर्तन मॉडल की शिक्षण एवं कार्य प्रणाली ने चर्च के कार्य में अत्यंत प्रभावशाली प्रगति दी।

पास्टर नथानिएल मरांडी दि बेथेल पेंतेकोस्तल चर्च डंडखोरा, कटिहार, बिहार के पास्टर हैं। उनसे इस पते पर संपर्क किया जा सकता है nathanielmarandi@yahoo.in

1. स्कूल जाने के लिए बच्चे को प्रोत्साहित करना।

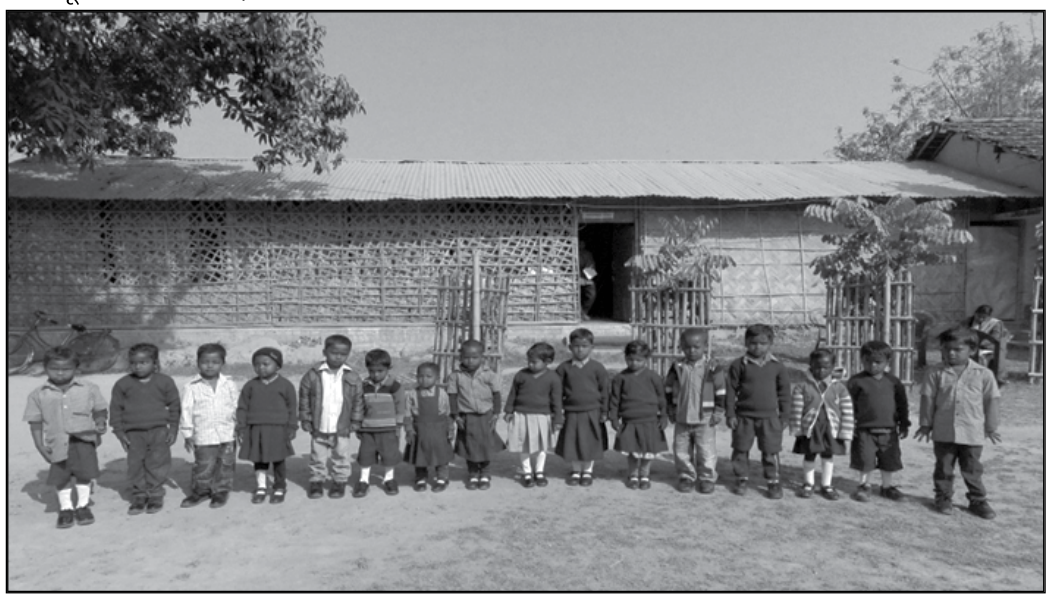

2. समुदाय के लोगों को सड़क मरम्मत के लिए प्रोत्साहित करना।

3. अच्छे स्वास्थ्य के लिए हरी सब्जियों को खाने के प्रति बच्चों एवं माँ को जागरूक करना ।

चित्र सौजन्य : पास्टर नथानिएल मरांडी

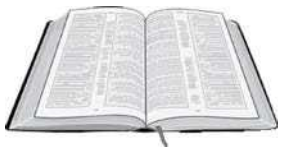

समग्र मिशन - हमारा कर्तव्य

श्रीमती ओलिता चन्द्रा

कृपया इन पदों को पढ़ें – मत्ती 9:35–38

पद 35 व 36 में हम पढ़ते हैं कि प्रभु यीशु सभी नगरो में गया और न सिर्फ परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार प्रचार किया बल्कि साथ ही उसने लोगों की सभी बीमारियों और दुर्बलताओं को दूर किया और उसने जब लोगो को असहाय, दुर्बल और निराश देखा तो उसको उन लोगो पर तरस आया क्योकि वचन बताता है कि उनका कोई रखवाला नही था। इसलिए यीशु मसीह ने अपने चेलों से कहा कि "पक्के खेत तो बहुत हैं पर मजदूर थोड़े हैं।" यीशु ने उनकी आवश्यकता को पहचाना और कहा कि "इसलिये खेत के स्वामी से विनती करो कि वो अपने खेत काटने के लिए मजदूर भेज दे।"

विचार व मनन के लिए प्रश्न

1- क्या आज की परिस्थिति बदल गयी है? या आज भी आपके क्षेत्र में लोगों को आप असहाय, दुर्बल व निराश अवस्था में पाते हैं? ऐसी परिस्थिति में हमारी क्या जिम्मेदारी बनती है?

2- जिस प्रकार यीशु मसीह का हृदय लोगों को देख कर दया से भर गया और उनको उन पर तरस आया क्या हमारा हृदय भी असहाय, दुर्बल व निराश लोगों के लिए दया से भरता है?

3- यीशु मसीह ने जिन मजदूरो के लिए विनती करने को कहा कहीं वो मजदूर हम ही तो नही हैं?

कृपया इन पदों को पढ़ें – मत्ती 25:31–40

इन पदों को पढ़ने के पश्चात् हमें ऐसा लगता है कि यीशु मसीह के हृदय में दुखी, बीमार, लाचार, कुचले, और अन्याय और पीड़ा से दबे हुऐ लोगो के लिए कितना अधिक प्रेम और आदर भाव था। 31 से 33 पदो में हम देखते है कि यीशु मसीह न्याय के दिन के बारे मे बात कर रहे हैं जिसका होना निश्चित है। पद 34 से 36 पद में यीशु मसीह ने उन लोगों के बारे मे बताया है जो धर्मी ठहराये जायेंगे और स्वर्गीय राज्य में प्रवेश करेंगे और पद 37–40 मे यह स्पष्ट कहा गया है कि वो धर्मी क्यों ठहरेंगे? लेकिन इसके विपरीत पद 41–46 हमें उन लोगों के बारे में बताती है जो अनन्त दंड के भागी होंगे। यह एक सामर्थी वचन है जो हमें यह स्मरण दिलाता है कि हमें किस प्रकार का जीवन जीना चाहिए।

विचार व मनन के लिए प्रश्न

1- क्या एक मसीही होने के नाते आपने कभी धर्मी ठहराये जाने और स्वर्गीय राज्य में प्रवेश करने के लिए इन पहलुओं पर विचार किया है?

2- क्या हमने कभी यीशु मसीह के हृदय और उसके प्रेम को समझने का प्रयास किया? क्या हमने यह सोचा कि वो हमारे जीवन से क्या चाहते हैं?

3- यह पद आपके व्यक्तिगत जीवन से क्या बात करता है?

4- यीशु मसीह ने गरीब, लाचार, दुखी, बीमार और कुचले हुऐ लोगों की सहायता करने को इतना महत्वपूर्ण स्थान क्यों दिया?

निष्कर्ष – यीशु मसीह ने पृथ्वी पर अपनी सेवा कार्य के दौरान दया भाव और प्रेम से भर कर लोगों की सहायता व मदद किया और हमें भी वैसा ही जीवन जीने के लिए अपने व्यक्तिगत जीवन के द्वारा प्रेरित किया और हमारे सामने एक उदाहरण रखा। आज फसल तैयार है और आवश्यकता है मजदूरों की जो यीशु मसीह के हाथ और पांव बन कर उसके राज्य के कार्यों को पूरा करें और न सिर्फ स्वंय धर्मी ठहर कर उद्धार पायें बल्कि औरों को भी अपने दया भाव और प्रेम के द्वारा उद्धार का मार्ग दिखायें। इससे हमारे समाज के दबे, कुचले, बीमार, लाचार और बेसहारा लोगों को सुख और शान्ति का जीवन प्राप्त हो सकेगा और हम परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार का प्रचार समग्रता से कर पायेंगे।

श्रीमती ओलिता चन्द्रा, एफिकोर में प्रोग्राम कोर्डिनेटर, केपेशिटी बिल्डिंग के रूप में कार्यरत हैं। उन्हें इस पत्रे पर संपर्क किया जा सकता है
olita@eficor.org

आप क्या कर सकते हैं ?

अपने व्यक्तिगत जीवन में –

- अपने आसपास रहने वाले गरीब, लाचार, दुखी, बीमार, विधवाओ, अनाथों, विकलांगो और शोषित लोगो के प्रति संवेदनशील बने और उनकी हर सम्भव सहायता करने का प्रयास करें।
- अपने क्षेत्र में किसी ऐसी संस्था से मिलें, जो ऐसे लोगो की सहायता के लिए कार्य करती है और उनसे पता करें कि आप किस प्रकार उनके इस कार्य में योगदान कर सकते हैं।
- अपने समाज में गरीबों के प्रति हो रहे अन्याय या शोषण के विरूद्ध आवाज बुलंद करें।
- आपके घर में, दफ्तर में, व्यापार में, काम कर रहे मजदूरों और आस–पड़ोस में गरीबी में जी रहे लोगो के साथ प्रेम भावना और सम्मानपूर्वक बातचीत करें।
- अपने परिवार के अन्य सदस्यों और मित्रों को भी उत्साहित करें कि वो भी इस ओर अपना कदम उठायें और गरीब, लाचार, दुखी, बीमार, विधवाओं, अनाथों, विकलांगो और शोषित लोगों की सहायता करें।

कलीसिया के जीवन में –

- अपनी कलीसिया को समग्र मिशन के बारे मे जागरूक करें जिससे मिशन के बारे उनकी सोच व्यापक हो सके और वो न्याय तथा सामाजिक परिवर्तन के लिए भी काम कर सकें।
- विशेष बाइबल अध्ययन और संदेश का आयोजन करें जो समग्र मिशन के विषय से सम्बन्धित हों।
- अपनी कलीसिया को विशेष दिनों जैसे अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस, बालिका दिवस, विकलांगता दिवस, एड्स दिवस, विश्व पर्यावरण दिवस और मानव अधिकार दिवस इत्यादि पर विशेष आयोजन करने तथा दान लेने के लिए उत्साहित करें।
- अपनी कलीसिया को किसी ऐसी संस्था के साथ मिल कर कार्य करने के लिए उत्साहित करें जो इन विषयों में कार्यरत हैं।

सामाजिक जीवन में –

- कमजोर और गरीबो को उनके अधिकार के बारे मे बतायें और उनके प्रति हो रहे अन्याय के विरूद्ध आवाज उठाने के लिए लोगों में जागरूकता लायें।
- लोगों मे जागरूकता लाये कि वो अपने घरों में बालश्रम न करायें, गरीबो का शोषण न करे और सेवकों और मजदूरों को उचित मजदूरी दें।
- घूस न लें, न दें और भ्रष्टाचार के खिलाफ मुहिम में शरीक हों
- मानव अधिकारों, यौन शोषण, घरेलू हिंसा इत्यादि के बारे पहले खुद सचेत हों और फिर दूसरों को सचेत करें।
- यीशु मसीह के छुटकारे के संदेश को अपने सामाजिक संर्दभों से जोड़ कर प्रचार करें और इसका व्यावाहारिक प्रदर्शन भी करें।

क्या आपको दृष्टिकोण का हिन्दी संस्करण पसंद आया ?

दृश्टिकोण का अंग्रेजी संस्करण पिछले 25 वर्षो से प्रकाशित किया जा रहा है, परन्तु हिन्दी भाषी पाठकों की जरूरत को ध्यान में रखते हुए, एफिकोर की प्रकाशन समिति ने हिन्दी में प्रकाशन करने का निर्णय लिया, जिसकी पहली प्रति आपने पढ़ी है।

हम आपसे जानना चाहेंगे कि आपको यह पत्रिका कैसी लगी? हम आपकी प्रतिक्रिया एंव इसे बेहतर बनाने के लिए आपका सुझाव जानना चाहेंगें। यदि आप चाहते हैं कि **दृष्टिकोण** के हिन्दी संस्करण का प्रकाशन जारी रहे तो आपके प्रत्युत्तर हमारे लिए बहुत महत्वपूर्ण होंगें। कृपया आप अपना नाम और पता साफ अक्षरों में हमें लिखकर भेजें ताकि हम आपके पते को पाठकों की सूची में सम्मिलित कर सकें।

नामः .....

पताः .....

फोन न.: .....

ई–मेलः .....

मुझे दृष्टिकोण का हिन्दी संस्करण

☐ बहुत पसंद आया ☐ पसंद आया ☐ संतोषजनक

☐ असंतोषजनक लगा– यदि आपका यह प्रत्युत्तर है, तो कृपया कारण भी बताएँ .....

☐ मैं दृष्टिकोण डाक के जरिये प्राप्त करना चाहूँगा/चाहूँगी

☐ मैं दृष्टिकोण ई–मेल के जरिये प्राप्त करना चाहूँगा/चाहूँगी

कृपया ऊपर का यह हिस्सा फाड़कर हमें इस पत्ते पर भेजेः

सम्पादक
एफिकोर
308, महट्टा टावर
B–54, कम्युनिटी सेंटर
जनकपुरी, नई दिल्ली–110058,
टेलीफोन– 91-11-25516383/4/5
ईमेल–hq@eficor.org
वेवसाइट– www.eficor.org

एफिकोर कर्नाटक सोसाइटी रजिस्ट्रेशन एक्ट 1960 के अर्न्तगत (कर्नाटक एक्ट न.17,1960) 30, अप्रेल 1980 को पंजीकृत किया गया। रजिस्ट्रेशन संख्या 70/80-81 है। एफिकोर एफ. सी. आर. ए. 1976 के अर्न्तगत भी पंजीकृत है और रजिस्ट्रेशन संख्या है 231650411

रजिस्टर्ड आफिस का पता–1305, ब्रिगेड टावर्स, 135 ब्रिगेड रोड, बंगलुरू –560025 कर्नाटक)

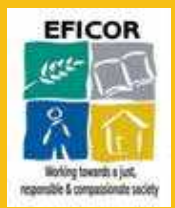
EFICOR
Working towards a just,
responsible & compassionate society

दृष्टिकोण